



राष्ट्रीय

छात्रशक्ति

वर्ष 2 ■ अंक 9 ■ दिसम्बर 2018 ■ ₹10 ■ पृष्ठ 40

बढ़ रहे हैं चरण अगणित
ध्येय के पथ पर निरंतर



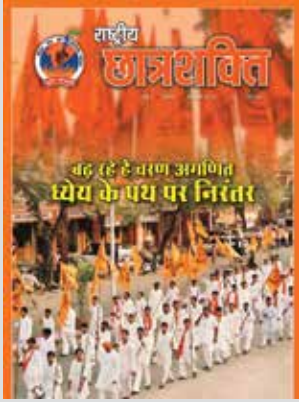
परिषद् गतिविधि



समरसता दिवस के अवसर पर दिल्ली स्थित बेगमपुर बस्ती की झुग्गियों में रहने वाले लोगों के साथ आत्मीय संवाद करते अभाविप कार्यकर्ता



राजेश एवं तापस के मौत की निष्पक्ष जांच और पं. बंगाल में एनआरसी लागू किये जाने की मांग को लेकर सड़क पर उतरे परिषद् कार्यकर्ता



राष्ट्रीय छात्रशक्ति

शिक्षा-क्षेत्र की प्रतिनिधि-पत्रिका

वर्ष 2, अंक 9
दिसम्बर, 2018

संपादक

आशुतोष भटनागर
संपादक-मण्डल :
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन
अजीत कुमार सिंह

संपादकीय पत्राचार :

राष्ट्रीय छात्रशक्ति
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298

✉ chhatrashakti.abvp@gmail.com

📘 www.facebook.com/rashtriyachhatrashakti

🐦 www.twitter.com/chhatrashakti1

स्वामी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक राजकुमार शर्मा द्वारा 26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आई.टी.ओ. के निकट, नयी दिल्ली - 110002 से प्रकाशित एवं ओशियन ट्रेडिंग कं., 132 एफ. आई. ई., पटपड़गंज इण्डस्ट्रियल एरिया, नयी दिल्ली-110092 से मुद्रित।



05

अभाविप के प्रेरणास्रोत : स्वामी विवेकानंद

आज से 155 वर्ष पूर्व 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में एक विलक्षण बालक ने जन्म लिया। बचपन में उसे 'बिले', 'नरेन' और 'नरेन्द्रदत्त नाम मिले और यही आगे चलकर ...

संपादकीय	04
संगठन की विकास-यात्रा के मील-पत्थर	09
'अंतर राज्य छात्र जीवन दर्शन'	13
अभाविप की विकास यात्रा.....	15
DR. S. SUBBIAH AND ASHISH CHAUHAN RE-ELECTED AS NATIONAL PRESIDENT AND NATIONAL GENERAL SECRETARY OF ABVP	
संदीप जोशी को मिला वर्ष 2018 का प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार	20
सामाजिक समरसता का दर्शन और चिंतन	21
विख्यात गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन	23
PROPOSAL OF SIX STATE UNIVERSITIES IN INSTITUTE OF EMINENCE A WELCOME STEP : ABVP	
महात्मा गांधी की सार्धशती पर विशेष आलेख शृंखला-4	26
देशभर में याद किये गये बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर	28
छात्रसंघ चुनावों में अभाविप ने लहराया जीत का परचम	30
शब्दरंग: साहित्य और कला का अद्भुत संगम	31
ABVP KOLKATA RALLY	
प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार	35
ABVP WELCOMES DELHI HC VERDICT AWARDED LIFE SENTENCE TO SAJJAN KUMAR	
राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री की सूची	37

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय



31 खिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के प्रेरणास्रोत स्वामी विवेकानन्द कहते हैं – अपने पीछे देखो, पीछे जो चिरन्तन निर्झर बह रहा है, आकंठ उसका जल पियो, उसके बाद भारत को उज्ज्वलतर और महत्तर बनाने के प्रयास में जुट जाओ। जिस प्रकार सिंह विचरण करते हुए हर थोड़ी देर बाद एक बार ठहरता है, अपनी की गयी यात्रा का मूल्यांकन करता है, और आगे की दिशा का निर्धारण कर आगे कदम बढ़ाता है, वैसे ही अभाविप प्रत्येक वर्ष अपने राष्ट्रीय अधिवेशन में गत एक वर्ष का मूल्यांकन कर आगे की योजना निश्चित करती है। परिषद का राष्ट्रीय अधिवेशन उसके लिये सिंहावलोकन का अवसर है।

स्थापना से अब तक की अपनी यात्रा में संगठन ने स्वामी विवेकानंद के दिये इस सूत्र को अपनी कार्यपद्धति का नियमित भाग बनाये रखा। इसके कारण संगठन निरंतर वर्धमान बना रहा। आपातकाल के दो वर्षों को छोड़ दें तो इस क्रम में कभी विक्षेप नहीं आया है। संगठन की केन्द्रीय टोली के लिये यह जहाँ मूल्यांकन का अवसर है वहीं नये कार्यकर्ताओं के लिये एक उत्सव। लेकिन न तो यह केवल वार्षिक आंकड़े जुटाने की कवायद है और न ही निरा उत्सव। वस्तुतः यह व्यक्ति निर्माण की अनूठी पद्धति का एक ऐसा आयाम है जो आने वाले कार्यकर्ता को एक लघु भारत के दर्शन का अवसर देता है। पहली बार आने वाले कार्यकर्ता के लिये यहां का वातावरण ऊर्जा से भर देने वाला होता है। विभिन्न भाषा-भूषा, फिर भी एक देश के लिये जीने-मरने की सौगंध उठाये कार्यकर्ताओं की संगठित शक्ति के दर्शन मात्र से उसकी कल्पनाओं को पंख लग जाते हैं। बिना किसी उपदेश के वह भी उन हजारों युवाओं की मालिका में एक मनका बन कर जुड़ जाता है जो विश्वमानचित्र पर भारत को उसका योग्य स्थान दिलाने के लिये प्रयासरत हैं।

भगवान बुद्ध के वचन – बुद्धं शरणं गच्छामि। संघं शरणं गच्छामि। धम्मं शरणं गच्छामि। के अनुसार ही किसी एक कार्यकर्ता के संपर्क में आकर जुड़ने वाले कार्यकर्ता को जब अधिवेशन में आकर संगठन की शक्ति का साक्षात्कार होता है, तभी उसे यह बोध होता है कि शक्ति का एक स्रोत उसके भीतर भी आलौडित हो रहा है। भीतर की इस घनीभूत ऊर्जा को जब राष्ट्रीय आयाम मिलता है तभी छात्र शक्ति – राष्ट्र शक्ति के रूप में प्रकट होती है।

व्यक्ति निर्माण की यह प्रक्रिया राष्ट्र पुनर्निर्माण का आधारभूत कारण बनती है। व्यक्ति का संस्कार कर उसे विराट से जोड़ देने की अनूठी प्रक्रिया के रूप में अभाविप के राष्ट्रीय अधिवेशनों की यह शृंखला परिणामकारी और स्वतःसिद्ध है। संगठन सूत्र में बंधी तरुणाई कठिन से कठिन अवसर पर भी पीछे न हटने का सामूहिक संकल्प लेती है। अनुकूल अवसरों पर उपलब्धियों की छलांगें लगाती है। स्थिति अनुकूल हो या प्रतिकूल, निरंतर आगे बढ़ती रहती है, गुनगुनाते हुए –

बढ़ रहे हैं चरण अगणित, ध्येय के पथ पर निरंतर॥

हार्दिक शुभकामना सहित,

संपादक



अभाविप के प्रेरणास्रोत : स्वामी विवेकानंद

। डॉ. बजरंगलाल गुप्त ।

आ

ज से 155 वर्ष पूर्व 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में एक विलक्षण बालक ने जन्म लिया। बचपन में उसे 'बिले', 'नरेन' और 'नरेन्द्रदत्त नाम मिले और यही आगे चलकर स्वामी विवेकानंद के नाम से विश्वविख्यात हुआ। उस समय देश और दुनिया विचित्र तमस भरी परिस्थितियों से गुजर रहे थे। भारत और भारतीय समाज पराधीनता की पराभूत मानसिकता से ग्रस्त होकर हताश और निराश था, भारत की सांस्कृतिक-आध्यात्मिक परम्परा और प्राचीन ग्रन्थों में उपलब्ध ज्ञान-राशि को वह दकियानूसी मानकर छोड़ने की राह पर चल पड़ा था। आत्मविश्वास खोता जा रहा था, इतना ही नहीं, सब प्रकार से दुःख-दैन्य के दंश को भोगने के लिए मजबूर हो चला था। दूसरी ओर विश्व, विशेषकर अमेरिका व यूरोप के देश अपनी औपनिवेशिक साम्राज्यवादी मनोवृत्ति के कारण अन्याय-अत्याचार व शोषण के पर्याय बनते जा रहे थे, धर्मांधता के कारण जोर जबर्दस्ती, लोभ-प्रलोभन से मतांतरण को वे अपना अनिवार्य कर्तव्य व अधिकार दोनों मान बैठे थे, भौतिक समृद्धि से मदहोश, तथा राज्य व सैनिक शक्ति के अहंकार से ग्रस्त हो चले थे,

इन सबके बीच उन देशों के समाज-जीवन में चारों ओर बेचैनी, अंसतोष, अशांति, व्यग्रता-उग्रता, सूनापन एवं अवसाद जैसे मनोरोग भी बढ़ रहे थे। इस प्रकार वह एक ऐसा समय था, जब चारों ओर अंधकार था, घनघोर अंधकार। किसी को कोई मार्ग नहीं सूझ रहा था, किधर जाना है और कैसे जाना है, कोई नहीं बता पा रहा था। ऐसे समय स्वामी विवेकानंद सचमुच एक प्रकाश-पुंज के रूप में प्रकट हुए दिखाई देते हैं। वह एक ऐसा व्यक्तिमत्त्व था जिसने भारत और विश्व दोनों को एक साथ समानांतर रूप से प्रभावित किया, आलोकित किया। भारत में आत्मगौरव एवं आत्मविश्वास का भाव जगाया, विशेषकर भारत के युवकों को अपने स्वयं के पुरुषार्थ के बल पर भारत माता को दुःख दैन्य की अवस्था से बाहर निकालकर इसे फिर से विश्व में गौरवमयी स्थान पर आरूढ़ करने के लिए संकल्पबद्ध और संगठित होने के लिए प्रेरित किया, और इस सब काम के लिए भारतीय समाज को इस घोषवाक्य के रूप में यह मंत्र दिया - 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्बोधत' (उठो, जागो और तब तक चलते रहो जब तक अपने लक्ष्य तक पहुंच न जाओ)। साथ ही शिकागो की सर्वधर्म सभा में पहुंचकर और बाद में अनेक देशों में भ्रमण कर अपने व्याख्यानों - प्रवचनों, चर्चा-परिचर्चाओं

के माध्यम से समस्त विश्व को एक नये दर्शन व दृष्टि के आलोक से आलोकित भी किया। 11 सितम्बर 1893 को शिकागो की सर्वधर्म सभा के मंच पर अपने प्रथम भाषण के संबोधन में जब उन्होंने, 'अमेरिकी बहनों व भाईयों' कहा तो समूचा सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। इस सम्बोधन के माध्यम से विवेकानंद ने उस भारतीय दृष्टि की ओर संकेत किया था जो विश्व-बाजार नहीं अपितु विश्व-परिवार की संकल्पना में विश्वास रखती है और इसलिए हम विश्व के सभी व्यक्तियों को अपना ही आत्मीय मानकर व्यवहार करते हैं। उन्होंने वेदांत दर्शन को भी विभिन्न संदर्भों में एवं विभिन्न प्रकारों से समझाकर यह भी बताया था, कि इसके आलोक में चलकर हम विश्व शान्ति, विश्व भाईचारा, एवं सर्वेभवन्तु सुखिनः के लक्ष्य तक अधिक आसानी से पहुंच सकते हैं। उन्होंने घोषणा की थी कि यह समय धार्मिक कट्टरता, धार्मिक उन्माद, मतान्तरण, संघर्ष एवं शत्रुतापूर्ण भावनाओं को बढ़ाने का नहीं है, बल्कि आओ हम सब मिलकर पारस्परिक सहयोग एवं पारस्परिक समन्वय के एक नए युग का सूत्रपात करें और इसकी पुष्टि में उन्होंने शिकागो की उस सभा में निम्नलिखित श्लोक का पाठ किया था-

रूचिनां वैचिन्त्यात् ऋजुकुटिल नानापथजुशाम् ।

नृणामेको गज्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥

स्वामी विवेकानंद ने अमेरिका जाने से पूर्व पांच वर्षों तक और विदेश यात्रा से लौटकर आने के बाद चार वर्षों तक कुल नौ वर्षों तक विस्तार से भारत भ्रमण किया। इस भारत-भ्रमण के दौरान उन्होंने देश की स्थिति-परिस्थिति और दशा व दिशा का प्रत्यक्ष दर्शन एवं अनुभव प्राप्त किया। उन्हें लगा कि भारत का गौरवपूर्ण, सुखी-समृद्ध-स्वावलंबी जीवन और यहां की समृद्ध सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा सबमें जबर्दस्त गिरावट आई हैं। यह देख वे बहुत व्यथित हो गए और तब मन ही मन निश्चय किया कि मैं इस चित्र को बदलकर भारत के पुनरोत्थान के लिए काम करूंगा। उनकी इच्छा थी कि जगती के

आंगन में भारत फिर से एक स्वाभिमानी, शक्तिशाली, स्वावलम्बी-समृद्धशाली, संस्कारित और संगठित राष्ट्र के रूप में अपना स्थान पा सके। राष्ट्रोत्थान के उद्देश्य की पूर्ति के लिए विवेकानन्द की हमें निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना होगा-

शक्ति - सबसे पहले हमें भारत के पुनोदय के लिए आवश्यक शक्ति संचय एवं शक्ति संपादन करना होगा। इस दृष्टि से उनके विचारों में हमें पांच प्रकार की शक्ति का संचय करना होगा संकल्पशक्ति, शारीरिक बलशक्ति, चरित्र शक्ति, अर्थशक्ति और संगठन शक्ति। देश की दुर्दशा, समस्याओं एवं कठिनाइयों को देखकर हताश-निराश होने की बजाय इस चित्र को बदलने का संकल्प एवं दृढ़ इच्छाशक्ति का परिचय देना होगा। वे मानते थे कि दृढ़संकल्प में से ही भावी प्रगति का मार्ग निकलता है। विवेकानंद बलहीन, कमजोर एवं पौरुष शून्य व्यक्ति एवं समाज को अच्छा नहीं मानते थे। अतः व्यक्ति और राष्ट्र दोनों को बल सम्पन्न बनाने पर जोर देते थे। युवकों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा था कि,

“हे मेरे युवक बंधुओं! तुम बलवान बनो, यही तुम्हारे लिए मेरा उपदेश है। बलवान शरीर से अथवा मजबूत पुट्टों से तुम गीता को अधिक समझ सकोगे।” वे आगे कहते हैं कि, “मैं जो चाहता हूँ, वह है लोहे की नसें और फौलाद के स्नायु, जिनके भीतर ऐसा मन निवास करता हो, जो कि वज्र के समान पदार्थ का बना हो। बल, पुरुषार्थ, क्षात्रवीर्य और ब्रह्मतेज। “एक जगह तो उन्होंने यहां तक घोषणा कर दी थी कि, “बल ही पुण्य है और दुर्बलता पाप। “वे तो यहां तक बोल उठे थे “अब झांझ मृदंग की बजाय रणभेरी, रणसिंगा व डमरू बजना चाहिए। हर-हर महादेव की गर्जना हो। शक्ति की पूजा चले। “इस प्रकार विवेकानंद की दृष्टि में देश के भीतर कानून व्यवस्था बनाए रखने एवं सीमा पर घुसपैठियों, आतंकवादियों एवं आक्रमणकारियों से सुरक्षा करने के लिए कमजोर नहीं, ताकतवर राज्यों और प्रबल सैन्य शक्ति की आवश्यकता होती है। स्वामीजी शारीरिक बल

स्वामी विवेकानंद जी का यह मानना था कि राष्ट्रोत्थान के लिए शक्ति के साथ भक्ति भी अनिवार्य है। उनका जोर दो प्रकार की भक्ति पर था-ईश्वर भक्ति और भारत भक्ति। उनका विश्वास था कि ईश्वर के प्रति पूर्ण निष्ठा रखते हुए धर्म, संस्कृति और अध्यात्म का सहारा लेकर ही हम अपना काम पूर्ण कर सकते हैं। भारत का प्राण तत्व एवं आत्म तत्व है धर्म और संस्कृति।

शक्ति के साथ चरित्रशक्ति एवं संस्कार शक्ति को भी देश के भाग्योदय के लिए आवश्यक मानते थे। अतः वे देश के प्रत्येक व्यक्ति को अवगुणों एवं कमजोरियों को दूर कर प्रेम, स्नेह, आत्मीयता, प्रामाणिकता, महिला के प्रति मातृवत् सम्मान दृष्टि आदि सदगुणों को अपने भीतर विकसित करने का आग्रह करते रहते थे। भारत अपने सच्चरित्र जीवन के कारण ही विश्व में सम्मान प्राप्त करता रहा है। इस संबंध में एक प्रसंग अत्यंत प्रेरणादायी है। स्वामीजी शिकागो की सड़क पर सैर करने निकले थे। कुछ अमेरिकी युवक-युवतियां उनके पीछे-पीछे चलते हुए उनके भगवा चोले के लिबास पर भद्दी-भद्दी टिप्पणियां करने लगे।

“Listen in your country a trailer can make a great but in my country where I have come it is the character and character only which makes a man great”

स्वामीजी का यह वाक्य सुनकर वे सब लज्जित होकर स्वामीजी के चरणों में नतमस्तक हो गए। इसके साथ ही स्वामीजी अर्थ या धनशक्ति को भी देशोत्थान के लिए आवश्यक मानते थे। उनका पक्का मानना था कि हमें देश में व्याप्त भुखमरी, गरीबी, बेरोजगारी, बीमारी और विषमता को दूर करने के लिए शीघ्र प्रयास करना चाहिए। गरीबी के संबंध में उनके मन की संवदेना इन शब्दों में प्रकट हुई थी, “दरिद्र लोगों का ख्याल आते ही मेरा हृदय असीम वेदना से कराह उठता है। “वे तो यहां तक कहा करते थे कि गरीब और दुःखी ईश्वर के ही रूप हैं, इन्हीं की पूजा व सेवा करो और इसी क्रम में उन्होंने ‘दरिद्र देवो भवः’ और ‘दरिद्रनारायण’ की संकल्पनायें प्रस्तुत की। उन्होंने कृषि एवं उद्योग दोनों क्षेत्रों में उत्पादन बढ़ाने और अपने देश की वस्तुओं का विदेशी व्यापार करने के बारों में अनेक सुझाव दिये। श्री जमशेदजी टाटा को जापानी माचिस को भारत में बेचने की बजाय भारत में ही माचिस उद्योग लगाने और विज्ञान व टेक्नोलॉजी की दृष्टि से अनुसंधान केन्द्र बनाने का सुझाव दिया था। इस प्रकार वे भारत को फिर से एक समृद्धशाली-स्वावलंबी राष्ट्र के रूप में देखना चाहते थे। इन सबसे ऊपर स्वामीजी ने संगठन शक्ति पर बड़ा जोर दिया था। देश में संगठन के अभाव के संबंध में दुःख प्रकट करते हुए उन्होंने एक पत्र में लिखा था कि, “भारत में तीन मनुष्य एक साथ मिलकर पांच मिनट

के लिए भी कोई काम नहीं कर सकते हैं। “वे कहा करते थे कि हमारे स्वभाव में संगठन का सर्वथा अभाव है, पर इसे हमें अपने स्वभाव में लाना है।” यदि हमें भारत को महान बनाना है और उसका भविष्य उज्ज्वल बनाना है तो इसके लिए आवश्यकता है संगठन की ओर बिखरी हुई इच्छा शक्ति को एकत्र लाने की। हमें ऋग्वेद की ऋचा ‘संगच्छध्वं संवदध्वम् संवोमनांसिजानताम्’ की भावना से काम करना होगा। उनका दृढ़ विश्वास था कि, “कोई सेवाभावी संगठन ही संपूर्ण भारत को संगठित कर पायेगा।”

भक्ति-स्वामी विवेकानंद जी का यह मानना था कि राष्ट्रोत्थान के लिए शक्ति के साथ भक्ति भी अनिवार्य है। उनका जोर दो प्रकार की भक्ति पर था-ईश्वर भक्ति और भारत भक्ति। उनका विश्वास था कि ईश्वर के प्रति पूर्ण निष्ठा रखते हुए धर्म, संस्कृति और अध्यात्म का सहारा लेकर ही हम अपना काम पूर्ण कर सकते हैं। भारत का प्राण तत्त्व एवं आत्म तत्त्व है धर्म और संस्कृति। यदि भारत का उत्थान होना है तो इसे ही आधार बनाना होगा। इसे छोड़कर किया जाने वाला कोई भी काम न तो हमें स्वीकार्य है और न ही वह हमारे लिए फलदायी हो सकता है। वे आग्रहपूर्वक यह बात कहा करते थे कि हमें पाश्चात्य भौतिकतावाद के चक्कर में पकड़कर अपने धर्म और अध्यात्म को भुला नहीं देना है। इस संबंध में उनका कथन है कि, “स्मरण रखो यदि तुम पाश्चात्य भौतिकवादी सभ्यता के चक्कर में पकड़कर आध्यात्मिकता का आधार त्याग दोगे तो उसका परिणाम होगा कि तीन पीढ़ियों में तुम्हारा राष्ट्रीय अस्तित्व मिट जाएगा क्योंकि राष्ट्र का मेरूदण्ड टूट जायेगा। इसका परिणाम होगा सर्वतोमुखी सत्यानाश।” ईश्वर भक्ति के साथ-साथ स्वामीजी देशभक्ति, राष्ट्रभक्ति और भारतभक्ति को भी उतना ही आवश्यक मानते थे। इसीलिए तो उन्होंने यहां तक कहा था कि आगामी कुछ वर्षों के लिए हमें सब देवी-देवताओं को भूलकर एक ही देवी की आराधना करनी चाहिए और वह है भारत माता। हमारे किसी भी काम की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कसौटी यह होनी चाहिए कि उससे भारत का हित हो। मेरी संपूर्ण शक्ति, बुद्धि, योग्यता भारत की प्रगति में काम आये। वे भारत के लोगों में अपने देश के प्रति स्वाभिमान का भाव जगाने के लिए कहा करते थे कि, “भारत में जन्म लेने के कारण लज्जित मत होओ वरन् गौरव का अनुभव करो। दूसरे देशों से हमें कुछ

लेना है अवश्य, पर दुनियां को देने के लिए हमारे पास इन देशों से सहस्र गुना अधिक है। भारत के साथ अपना तादात्म्य स्थापित करते हुए उन्होंने कहा था कि, “मैं धनीभूत भारत हूँ।” भारत के प्रति इस प्रकार की भावना के कारण ही जब वे विदेश यात्रा से लौटकर भारत के समुद्र तट पर उतरे तो दौड़कर सर्वप्रथम भारत की मिट्टी में लोटपोट हो गए। उनके स्वागत में माला थामे हुए और जयजयकार करते हुए लोग यह दृश्य देखकर आश्चर्यचकित हो गए। ऐसा करने का कारण पूछने पर स्वामीजी ने कहा कि इतने वर्षों तक विदेश में रहने के कारण मैं भारत मां के आंचल से दूर रहा, आज फिर से मां के आंचल में लिपट कर मैं धन्य हो गया, पवित्र हो गया। ऐसी थी उनकी भारत भक्ति। अपने एक संदेश में उन्होंने कहा था कि, “गर्व से कहो कि मैं भारतवासी हूँ, प्रत्येक भारतवासी मेरा भाई है। ब्राह्मण भारतवासी, अज्ञानी भारतवासी, दरिद्र-पीड़ित-वंचित भारतवासी सभी मेरे भाई हैं। भारत का समाज मेरे बचपन का झूला, जवानी की फुलवारी और बुढ़ापे की काशी है। बोलो भाई बोलो कि भारत की मिट्टी मेरा स्वर्ग है और भारत के कल्याण में ही मेरा कल्याण है।”

युक्ति-किसी भी देश के समुचित विकास के लिए नीति-रणनीति, तकनीक-टेक्नोलॉजी एवं प्रबंधन का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, हम उससे अछूते नहीं रह सकते। इसीलिए स्वामी विवेकानंद जी कहा करते थे कि हमें अपने देश के लोगों विशेषकर नौजवानों को विज्ञान की शिक्षा देनी चाहिए। कृषि एवं उद्योग दोनों क्षेत्रों में उपयुक्त टेक्नोलॉजी अपनाकर इन क्षेत्रों में उत्पादन बढ़ाया जाना चाहिए। विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में नए-नए अनुसंधान में जाने चाहिए। स्वामीजी का मानना था कि अब समय आ गया है जब हमें विज्ञान एवं धर्म, भौतिक समृद्धि एवं आध्यात्मिक उन्नति तथा पश्चिम एवं पूर्व के बीच समुचित समन्वय बनाना चाहिए। इतिहास साक्षी है कि सब प्रकार के संसाधन होने के बावजूद आधुनिक तकनीक-टेक्नोलॉजी एवं उचित प्रबंधन के अभाव में

हम अपेक्षित प्रगति नहीं कर पाए। यहां यह बात भी ध्यान में रखनी होगी कि भारत के पारंपारिक तकनीक-टेक्नोलॉजी का प्रचुर भण्डार है। इसमें आवश्यक संशोधन कर युक्तानुकूल बनाना होगा और विश्व में विकसित तकनीक व टेक्नोलॉजी को देश की परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित कर अपनाया जाएगा। आज के विज्ञान, तकनीक व टेक्नोलॉजी का गलत उपयोग न हो और पर्यावरण तथा देश के सांस्कृतिक जीवन मूल्यों को नुकसान न पहुंचाए, इसके लिए इसे आध्यात्मिक धरातल के साथ जोड़कर रखना होगा।

गति-स्वामीजी का मानना था कि विकास की दौड़ में भारत पिछड़ गया है, अतः हमें अधिक गति से काम करना होगा। इसके लिए चरित्रवान-संस्कारवान मनुष्यों की एक सबल-सक्रिय कार्यशक्ति खड़ी करनी होगी। इसीलिए स्वामीजी कहा करते थे कि यदि मुझे संस्कारवान और पूर्ण मनोभाव से काम करने वाले कुछ सौ परिश्रमी नौजवान मिल जायें तो मैं देश का चित्र बदल सकता हूँ। इस सम्बन्ध में उनका यह

कथन ध्यान देने योग्य है- “हमें चाहिए प्रज्ञावान, वीर और तेजस्वी युवक जो मृत्यु से आलिंगन करने का और समुद्र को लांघ जाने का साहस रखते हो। सिंह के पौरुष ये युक्त, परमात्मा के प्रति अटूट निष्ठा से संपन्न और पावित्र्य की भावना से उद्दीप्त सहस्रों नर-नारी दरिद्रों व उपेक्षितों के प्रति हार्दिक सहानुभूति लेकर देश के एक कोने से दूसरे कोने तक भ्रमण करते हुए मुक्ति का, सामाजिक पुनरोत्थान का सहयोग और समता का संदेश देंगे।” स्वामीजी का यह भी आग्रह रहता था कि समाजोत्थान और समाजसेवा यह काम किसी भी प्रकार की बाधाओं व कठिनाईयों की परवाह न कर बिना रूके बिना झूके सतत चलते रहना चाहिए। अपने इस भाव को वे इस प्रकार प्रकट किया करते थे-

“उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्यवराग्निबोधत” अर्थात् उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक रूको मत। आज समय आ गया है कि स्वामीजी के इस संदेश को हृदयंगम कर हम पूर्ण मनोयोग से राष्ट्रोत्थान के काम में लग जायें। ■

राष्ट्रीय अधिवेशन संगठन की विकास-यात्रा के मील-पत्थर



| आशुतोष भटनागर |

19

47 में स्वतंत्रता की संभावना दिखने भर से देश के छात्र-युवाओं की उम्मीदों को पंख लग गये थे। दूसरी ओर तत्कालीन भारतीय नेतृत्व सत्ता को अपने नजदीक पाकर वैसे ही व्यवहार करने लगा था जैसा अंग्रेज किया करते थे। कुछ दिन पहले तक यही नेतृत्व इन्हीं नौजवानों को आगे कर संघर्ष करता था वहीं अब वह उन्हें अनुशासन और आज्ञापालन के निर्देश देने लगा था।

यह जान कर किसी को भी आश्चर्य होगा कि 15 अगस्त को स्वतंत्रता मिलने से दस दिन पहले संयुक्त प्रान्त की अंतरिम सरकार ने काशी के आंदोलनरत छात्रों को पुलिस से पिटावाया। यही नहीं, जब कुछ राजनेताओं ने समझौते की बात की तो तत्कालीन कांग्रेस के मुख्यमंत्री ने यह कह कर इनकार कर दिया कि समझौता बराबर के लोगों में होता है। विद्यार्थियों का यह स्तर नहीं कि सरकार उनसे बात करे। उसकी नियत तब और साफ हो गयी जब महात्मा गांधी की हत्या के बहाने उसने अपने वैचारिक

विरोधियों को जेल में ठूसना शुरू कर दिया।

इन घटनाओं ने स्वतंत्रता की उमंग में झूम रहे नौजवानों को दो संदेश दिये। पहला, देश में विभाजन की कीमत पर केवल सत्ता का हस्तांतरण हुआ है, नये सत्ताधीशों की मानसिकता भी वही है। इसलिये संघर्ष समाप्त नहीं हुआ है, स्वतंत्र भारत में भी यह जारी रहेगा। दूसरा, परिवर्तन के जिस सपने को उन्होंने देखा था उसे साकार करने के लिये नयी सत्ता देश के छात्र-युवाओं को साथ लेने के लिये तैयार नहीं थी। वह चाहती थी देश के लिये नीतियां बनाने और उन्हें लागू करने का सारा काम उनके भरोसे छोड़ दिया जाय ताकि वे मनमानी कर सकें। सुविधाभोगी जीवन और भ्रष्टाचार उस शुरुआती दौर में ही कांग्रेस में पनप चुका था। इसलिये अपने सपनों का भारत गढ़ने के लिये उन्हें खुद मैदान में आना होगा, यह संदेश तत्कालीन सत्ता के आचरण से प्रकट हुआ जिसे नौजवानों की तत्कालीन पीढ़ी ने बखूबी समझ लिया।

ऐसे ही दौर में देश भर में जगह-जगह छात्रों और युवाओं ने नवरचना में अपना योगदान देने के लिये छोटे-छोटे समूहों में काम करना शुरू किया। अखिल भारतीय

विद्यार्थी परिषद भी उन्हीं में से एक समूह की पहल थी। ऐसी पहल अन्य अनेक स्थानों पर भी हुई। जम्मू में नेशनलिस्ट स्टूडेंट्स एसोसियेशन का गठन हुआ। मध्य प्रदेश, विदर्भ और दिल्ली में भी ऐसे ही प्रयास हुए। कुछ समय बाद इन समूहों के बीच भी संवाद स्थापित हुआ और दिल्ली में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के नाम से 9 जुलाई 1949 को संगठन का पंजीयन हुआ।

पंजीकरण के दस्तावेज में हमें 16 सदस्यों के हस्ताक्षर प्राप्त होते हैं। इन्हीं के कुछ अन्य मित्रों के साथ जो पहला सम्मेलन हुआ उसे प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन का नाम दिया गया जिसमें श्री ओमप्रकाश बहल को अध्यक्ष और श्री केशवदेव शर्मा को महामंत्री चुना गया। आज हम अभाविप का जो व्याप देखते हैं वह बीजरूप में प्रारंभ हुए इस प्रयास का ही परिणाम है।

अधिवेशनों की शृंखला बढ़ती गयी और संगठन की गति भी। नित नये प्रयोग और सफलता का आख्यान। स्थापना के साथ ही “भारतीयकरण उद्योग” की घोषणा की गयी। देश का नाम ‘भारत’ हो, राष्ट्रगीत ‘वन्दे मातरम्’ हो, राष्ट्रभाषा ‘हिन्दी’ हो जैसे बुनियादी प्रश्नों को लेकर यह आंदोलन आगे बढ़ा। उत्तर प्रदेश में स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में आंदोलन चला तो विदर्भ में स्व. दत्तोपंत ठेंगडी और मध्यभारत में स्व. रामशंकर अग्निहोत्री ने मोर्चा संभाला। मन को छूने वाले इन विषयों को देश के युवाओं का भरपूर साथ मिला और संगठन अखिल भारतीय रूप लेता गया।

श्री लाला राम गुप्ता, श्री नरेश जौहरी, प्रा. वेद प्रकाश नंदा, डॉ. सुरेन्द्र मित्तल, श्री नकुल भार्गव, डॉ. मुरली मनोहर जोशी, श्री माधव परलकर, प्रा. हरिवंश लाल ओबराय, श्री विजय मंडलेकर, प्रा. वी. त्रागराजन, डॉ. एम. वी. कृष्णराव, श्री रामकृष्ण मिश्र, प्रा. दत्ताजी डिडोलकर, प्रा. गिरिराज किशोर, श्री भोलानाथ विज, प्रा. यशवंतराव केलकर, श्री विकास भट्टाचार्य, प्रा. नारायण भाई भंडारी, श्री संगमेश्वर रेड्डी, श्री पद्मनाभ आचार्य, श्री व्ही रविकुमार, श्री नटकर लाल राजगुरु, श्री राजकुमार भाटिया, श्री बाल आटे और श्री पिरट्ला वैकटेश्वरलू

जैसे चिंतक और आत्मविश्वास के धनी कार्यकर्ताओं की मालिका बनती गयी और संगठन उपलब्धियों के कीर्तिमान बनाता चला गया।

स्वतंत्रता के अभी 25 वर्ष भी न बीते थे कि भ्रष्टाचार ने सत्ता की जड़ों तक अपनी जगह बना ली। 1973 में गुजरात में चिमन भाई पटेल की सरकार थी जिस पर भ्रष्टाचार के आरोपों के चलते छात्र-युवा आक्रोश में थे। एक कॉलेज से शुरू हुए छात्र आंदोलन के पीछे पूरा प्रदेश उमड़ आया। यह आंदोलन चिमन भाई पटेल की सरकार की बलि लेकर ही शांत हुआ। इस पृष्ठभूमि में अहमदाबाद में परिषद का 24वां राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ। गुजरात में सत्ता परिवर्तन के पश्चात आई शांति तूफान के पहले की शांति साबित हुई। अधिवेशन में ही देश के अनेक राज्यों से आये प्रतिनिधियों ने भी अपने राज्य में

बढ़ते भ्रष्टाचार पर चिंता व्यक्त की। यहीं परिषद ने भ्रष्टाचार के विरुद्ध राष्ट्रव्यापी आन्दोलन खड़ा करने का निर्णय लिया।

गुजरात की आग सबसे पहले बिहार में पहुंची। भ्रष्टाचार में आकंठ डूबी अब्दुल गफूर की सरकार के विरुद्ध परिषद ने राज्य भर के छात्रों को एकजुट किया। श्री रामबहादुर राय, सुशील मोदी और श्री गोविन्दाचार्य के नेतृत्व में आंदोलन प्रारंभ हुआ और छात्रों

के साथ ही प्रदेश की जनता भी भ्रष्टाचार के विरुद्ध उठ खड़ी हुई। यह वह दौर था जब छात्रनेताओं के आह्वान पर लाखों लोग पटना की सड़कों पर उतर आते थे। सत्ता के नशे में चूर गफूर सरकार ने छात्र आंदोलन को लाठियों से कुचलने की कोशिश की और आंदोलन भड़कता गया। छः महीने के निरंतर आंदोलन के बाद जिस दिन पुलिस ने निहत्थी जनता पर गोली चलाई उस दिन सभी का धैर्य जवाब दे गया। लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने घोषणा कर दी कि “इस सरकार को अब सत्ता में रहने का अधिकार नहीं है”।

जिस दिन छात्रों के आंदोलन का नेतृत्व करने लोकनायक जयप्रकाश नारायण पटना की सड़क पर आये उस दिन दो लाख से ज्यादा जनता भी छात्रों के इस आंदोलन के समर्थन में थी। लाखों की इस भीड़ के बीच

स्वतंत्रता के अभी 25 वर्ष भी न बीते थे कि भ्रष्टाचार ने सत्ता की जड़ों तक अपनी जगह बना ली। 1973 में गुजरात में चिमन भाई पटेल की सरकार थी जिस पर भ्रष्टाचार के आरोपों के चलते छात्र-युवा आक्रोश में थे। एक कॉलेज से शुरू हुए छात्र आंदोलन के पीछे पूरा प्रदेश उमड़ आया। यह आंदोलन चिमन भाई पटेल की सरकार की बलि लेकर ही शांत हुआ।

72 वर्ष के जयप्रकाश को पुलिस ने लाठियों से पीट कर हत्या करने की कोशिश की। युवाओं ने लाठियों के प्रहार अपने ऊपर सह कर जयप्रकाश को जीवित बचा लिया। इस घटना के विरोध में दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रों ने छात्रसंघ अध्यक्ष अरुण जेतली के नेतृत्व में एक विशाल सभा का आयोजन किया जिसे स्वयं जयप्रकाश नारायण ने संबोधित किया। इसके साथ ही आंदोलन ने राष्ट्रव्यापी स्वरूप ग्रहण कर लिया।

देश भर में जब भ्रष्टाचार के विरुद्ध युवाशक्ति जूझ रही थी, परिषद का रजत जयन्ती अधिवेशन मुंबई में आयोजित हुआ। यह तब तक का सबसे बड़ा अधिवेशन था जिसमें लगभग 6 हजार विद्यार्थियों ने भाग लिया। सागर के तट से छात्र शक्ति ने दिल्ली की सत्ता को सीधी चुनौती दी और आर-पार की लड़ाई की घोषणा कर दी। जयप्रकाश नारायण ने युवाओं से निर्णायक संघर्ष की अपील की और इसे 'सम्पूर्ण क्रांति' का नाम दिया। "सम्पूर्ण क्रांति का बिगुल बजा तो जाग उठी तरुणाई है, तिलक लगाने तुम्हें जवानों क्रांति द्वार पर आई है" गुनगुनाते हुए जब कार्यकर्ता अधिवेशन से संकल्पबद्ध होकर अपने-अपने प्रांतों में पहुंचे तो सभी स्थानों पर क्रांति की मशाल धधक उठी। स्वतंत्र भारत में यह पहले निर्णायक आंदोलन का आगाज था और छात्रशक्ति नया इतिहास रचने की ओर अग्रसर थी।

जून 1975 में उत्तर प्रदेश उच्च न्यायालय का ऐतिहासिक फैसला आया जिसमें तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को चुनाव में भ्रष्ट आचरण का दोषी पाया और उनका निर्वाचन रद्द कर दिया गया। इंदिरा गांधी ने न्यायालय के निर्णय का आदर करने के स्थान पर देश में आपातकाल लागू कर दिया और समूचे विपक्ष को जेल के सीखचों के पीछे पहुंचा दिया। जयप्रकाश नारायण भी गिरफ्तार कर लिये गये। देश नेतृत्वविहीन था और ऐसे में कॉलेज में पढ़ने वाले इन नौजवानों ने तानाशाही के खिलाफ अहिंसक संघर्ष के लिये अपने भविष्य को दांव पर लगा कर भी देश के भविष्य को संवारने का प्रण किया।

'भारत माता की जय' और 'वन्दे मातरम्' के नारे लगाते हुए कार्यकर्ता जहां एक ओर सत्याग्रह कर जेलें भर रहे थे वहीं दूसरी ओर भूमिगत आंदोलन का पूरा तंत्र खड़ा करके जन-जन को इस आन्दोलन के पक्ष में खड़ा कर रहे थे। 1975 और 1976, यह दो वर्ष थे जब सत्तर वर्षों के अभाविप के इतिहास में राष्ट्रीय अधिवेशन नहीं

हो सके। लेकिन अधिवेशन न हो सकने का संदेश और गहरा था। तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. बाल आपटे और महामंत्री डॉ महेश शर्मा के नेतृत्व में यह लड़ाई रंग लायी। 1977 में देश में आम चुनाव हुए और इंदिरा गांधी को सत्ता से हटना पड़ा। जेलों में बंद विपक्ष के नेता छूटे और चुनाव जीत कर सत्ता में आये। 1998 में परिषद के 50वें राष्ट्रीय अधिवेशन में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे श्री जॉर्ज फर्नांडीज ने उस काल को याद करते हुए कहा कि जेलों में बंद हम लोग यह सोच भी नहीं सकते थे कि हमारे बिना कोई आंदोलन खड़ा हो सकेगा। लेकिन उस समय देश के युवाओं ने जो भूमिका निभायी वह स्वर्णिम अक्षरों में लिखे जाने योग्य है।

देश में लोकतंत्र बहाल हुआ। अभाविप इस समग्र आंदोलन की विजेता के रूप में उभरी थी। जनता पार्टी, जिसने सत्ता की बागडोर संभाली थी, चाहती थी कि विद्यार्थी परिषद भी अन्य तमाम दलों की तरह ही लोकसभा के चुनावों में भाग ले और सत्ता में शामिल हो। नवम्बर 1977 में वाराणसी में अभाविप का 26वां राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित किया गया। अधिवेशन में इस प्रश्न पर भी गहराई से चर्चा हुई और सर्वसम्मति से सत्ता में भागीदारी के प्रस्ताव को नकार दिया गया। "राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के व्यापक संदर्भ" में शिक्षा क्षेत्र में अपनी भूमिका को सीमित रखने के अपने संकल्प को दोहराते हुए "दल और सत्ता की राजनीति से ऊपर" उठ कर काम करने का निश्चय किया।

जब दिल्ली में राजनीति में अपनी जगह बनाने की होड़ लगी थी, शिव की नगरी काशी में कार्यकर्ताओं ने राष्ट्रीय अधिवेशन में "ग्रामोत्थान हेतु छात्र" का शिवसंकल्प लिया। "गांव-गांव में जायेंगे-भारत भव्य बनायेंगे" का नारा गूंज उठा और हजारों विद्यार्थी उन गांवों की ओर चल पड़े जहां असली भारत उनकी बाट जोह रहा था। परिषद ने इसे नये युग का सूत्रपात माना और गीत गाया -

युवा कमर कसो कि कष्ट-कष्टकों की राह है,
प्राणदान का समय उमंग है, उछाह है,
पगों में आंधियां भरे प्रयाण-गान चाहिये।
नवीन पर्व के लिये नवीन प्राण चाहिये।।

दिल्ली में सत्ता की बंदर-बांट को लेकर संघर्ष शुरू हो गया। केवल द्वाइं वर्ष में ही जनता पार्टी की सरकार का पतन हो गया और इंदिरा गांधी सत्ता में पुनः वापस आयीं। पंजाब की राजनीति को साधने के लिये जिस भिंडरवाला

को उन्होंने संरक्षण दिया, अंततः वही सिख आतंकवाद की धुरी बन गया। अपनी राजनैतिक भूल की कीमत उन्हें अपने प्राण देकर चुकानी पड़ी। देश में अनेक स्थानों पर सिखों के विरुद्ध हिंसा का दौर चला जिसमें कांग्रेस के कार्यकर्ता लिप्त पाये गये। इंदिरा गांधी हत्याकांड के तुरंत बाद हुए चुनावों में सहानुभूति की लहर पर सवार होकर राजीव गांधी भारी बहुमत से सत्ता में आये।

वर्ष 1985 को संयुक्त राष्ट्र संघ ने “अंतर्राष्ट्रीय युवा वर्ष” घोषित किया। वैश्विक स्तर पर अनेक प्रकार की गतिविधियां चलीं। सोवियत संघ की राजधानी मास्को में विश्व भर के छात्र-युवा संगठनों के प्रतिनिधियों का अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित हुआ। अभाविप का प्रतिनिधि मण्डल भी इसमें आमंत्रित किया गया। यहीं यह स्थापित हुआ कि परिषद विश्व का सबसे बड़ा छात्र संगठन है। इसी वर्ष दिल्ली में राजघाट

पर आयोजित अपने राष्ट्रीय अधिवेशन में अभाविप ने विश्व के अनेक देशों के छात्र-युवाओं को आमंत्रित किया। परिषद की पहल पर विदेशी प्रतिनिधियों की उपस्थिति में “विश्व विद्यार्थी युवा संघ” की नींव रखी गयी।

आंध्रप्रदेश में इस समय नक्सली हिंसा चरम पर थी। वैचारिक आधार पर उनका सामना करने का साहस विद्यार्थी परिषद ने दिखाया। राष्ट्रवाद की मशाल को जलाये रखने के लिये परिषद के दो दर्जन से अधिक कार्यकर्ताओं ने अपने प्राणों की बलि दी। हिंसक नक्सलियों को उनके घर में जाकर चुनौती देने और वहां की परिस्थिति की ओर देश का ध्यान आकृष्ट करने के लिये संगठन ने 1986 का राष्ट्रीय अधिवेशन हैदराबाद में आयोजित किया। 1987 आते-आते कांग्रेस सरकार रक्षा सौदों में दलाली के आरोपों में घिर गयी। इस वर्ष आगरा में सम्पन्न राष्ट्रीय अधिवेशन में परिषद ने भ्रष्टाचार के खिलाफ जन-जन तक जाने की घोषणा की। जल्दी ही परिणाम सामने आया और राजीव गांधी आम चुनाव में परास्त हुए।

विश्वनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व में बनी नयी सरकार भी समझौतावादी और नाकारा साबित हुई। 1990 में कश्मीर से हिंदुओं के निष्कासन और 1991 में बांग्ला

देश को तीन बीघा क्षेत्र सौंपने के विरुद्ध परिषद को बड़े अभियान चलाने पड़े। 1992 का राष्ट्रीय अधिवेशन कानपुर में सम्पन्न हुआ। हजारों कार्यकर्ता कानपुर से सीधे रामजन्मभूमि पर कारसेवा के लिये अयोध्या पहुंचे। इसके आगे का इतिहास सर्वविदित है।

अभी तक का सबसे बड़ा राष्ट्रीय अधिवेशन 1998 में मुंबई में सम्पन्न हुआ। यह संगठन का ‘स्वर्ण जयन्ती वर्ष’ था। पचास वर्षों की यात्रा के सिंहावलोकन का अवसर। परिषद ने एक “स्वर्ण संकल्प” स्वीकृत किया जो संगठन के वैचारिक प्रस्थान बिन्दुओं पर प्रकाश डालता है, प्रतिबद्धता को व्यक्त करता है तथा भविष्य का दिशादर्शन कराता है।

स्वर्ण जयन्ती अधिवेशन के बाद भी दो दशकों की यात्रा और पूरी हो गयी है। गत वर्ष का अधिवेशन रांची

में हुआ जहां प्रो. एस. सुबैय्या अध्यक्ष और आशीष चौहान महामंत्री चुने गये। वर्ष 2018 के इस कर्णावती अधिवेशन में अध्यक्ष व महामंत्री, दोनों ही पुनः निर्वाचित हुए हैं। इस बीच सम्पन्न हुआ प्रत्येक अधिवेशन अपने-आप में कुछ-न-कुछ अनूठापन लिये हुआ था। इन वर्षों में संगठन का क्षैतिज विकास भी हुआ है और ऊर्ध्वाधर भी। काम के आयाम जुड़ते चले गये और शिक्षा क्षेत्र

का शायद ही कोई संकाय बचा हो जहां परिषद ने अपनी उपस्थिति दर्ज न करायी हो।

70, 80 और 90 के दशकों में वरिष्ठ कार्यकर्ता सिद्धांत रूप में कहा करते थे कि “ऐसा कोई विषय नहीं जो हमारे लिये अविषय हो”। आज यह प्रत्यक्ष साकार होता हुआ दिखता है। एक छात्र संगठन के लिये सात दशकों की अबाधित यात्रा ही अपने-आप में एक उपलब्धि है। परिषद ने निरंतर वर्धमान रहते हुए व्यक्ति निर्माण से राष्ट्रनिर्माण की इस चलती-फिरती कार्यशाला को जीवंत रखने का जो पराक्रम दिखाया है उसके पीछे हजारों लाखों कार्यकर्ताओं की मौन तपस्या है, मुखर संघर्ष है और है एक संकल्प – “तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहें न रहे”। ■

70, 80 और 90 के दशकों में वरिष्ठ कार्यकर्ता सिद्धांत रूप में कहा करते थे कि “ऐसा कोई विषय नहीं जो हमारे लिये अविषय हो”। आज यह प्रत्यक्ष साकार होता हुआ दिखता है। एक छात्र संगठन के लिये सात दशकों की अबाधित यात्रा ही अपने-आप में एक उपलब्धि है। परिषद ने निरंतर वर्धमान रहते हुए व्यक्ति निर्माण से राष्ट्रनिर्माण की इस चलती-फिरती कार्यशाला को जीवंत रखने का जो पराक्रम दिखाया है उसके पीछे हजारों लाखों कार्यकर्ताओं की मौन तपस्या है, मुखर संघर्ष है और है एक संकल्प – “तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहें न रहे”।

एकात्मता का प्रतीक 'अंतर राज्य छात्र जीवन दर्शन'

। अश्विनी परांजपे ।

सू

रज की पहली किरण से आलोकित होने वाला उत्तर-पूर्व भारत यानि सिक्किम, अरुणाचल, असम, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम, मणिपुर और नागालैंड। उत्तर-पूर्व की धरती को ब्रह्मपुत्र ने पावन किया है, यह ब्रह्मा की भूमि है, शक्तिपीठ कामाख्या की भूमि है। भगवान शिव ने महादानव त्रिपुरासुर का वध करके इस धरती को पावन किया है, जिसका वर्णन शिवपुराण में मिलता है। विभिन्न जनजातियों, विभिन्न पर्वतों-पठारों में विभाजित यह सुन्दर क्षेत्र एवं इसकी परम्पराएं भारत का गौरव गान हैं।

भारत की संस्कृति विविधता में एकता की संस्कृति है। हमारी आस्थाएं अलग हो सकती हैं लेकिन पूर्वज बदल नहीं सकते। अतिथि देवो भव, सर्वे भवन्तु सुखिनः के संस्कार समाप्त नहीं हो सकते। अलगाववाद भारत के हित शत्रुओं द्वारा भारत को तोड़ने के लिए किया गया सोचा समझा प्रयास है। भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में अलगाव को समाप्त कर एकात्मता की बयार बहाने का कार्य SEIL ('अंतर राज्य छात्र जीवन दर्शन' student's experience in inter state living) ने किया है।

सन 1965 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के दो कार्यकर्ता श्री पद्मनाभ आचार्य एवं श्री दिलीप परांजपे उत्तर पूर्व भारत के भ्रमण के लिए गए। तब उन्होंने महसूस किया कि आवश्यकता है हमारे उत्तर-पूर्व के भाई-बहनों को यह बताने की कि पूरा भारतवर्ष आपके साथ खड़ा है। आवश्यकता है पूर्वोत्तर भारत और शेष भारत में संवाद स्थापित करने की। विविधता में एकता की हमारी संस्कृति को बल देने की आवश्यकता महसूस हुई और student's experience for inter state living (SEIL) अर्थात् अंतर्राज्यीय छात्र जीवन दर्शन की संरचना खड़ी की गई। यह प्रकल्प अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के अंतर्गत प्रारम्भ किया गया जिसने अलगाववाद और अस्थिरता के माहौल में एकात्मता स्थापित करने के लिए संजीवनी का काम किया। विविधता में एकता भारतीय संस्कृति का आधार है अतः SEIL द्वारा इस भाव को

जगाया गया कि मेरा देश मेरा घर है, मेरा भारत मेरा घर है एवं भारत को जानने के लिए SEIL के अंतर्गत My Home Is India (मेरा घर मेरा भारत) प्रकल्प का शुभारम्भ हुआ। 1966 में My Home Is India के अंतर्गत सर्वप्रथम पूर्वोत्तर के चयनित 17 छात्र मुंबई जाकर रहे। उस समय जो छात्र मेजबान परिवारों में जाकर रहे और अपनेपन का अनुभव किया वह सम्बन्ध अगली पीढ़ी तक निरंतर रहने के उदाहरण भी विद्यमान हैं। इनमें से ही एक छात्र लेखी फुन्नाखो, जो तिब्बत सीमा के तवांग गाँव का रहने वाला था, पढाई के लिए 16 वर्ष तक मुंबई में प्रख्यात गायक व संगीतकार सुधीर फडके, जिन्हें बाबू जी कहते थे, के घर पर रहा और पढाई पूरी की। उसने अपना नाम दीपक लिखवाया और अपने नाम के साथ बाबूजी का नाम जोड़ा अर्थात् दीपक सुधीर फडके। दीपक के साथ केवल बाबूजी का नाम ही नहीं जुड़ा अपितु यह जीवन भर के संबंधों में परिवर्तित हो गया। दीपक (लेखी फुन्नाखो) पढाई पूरी कर वापस पूर्वोत्तर गया और अपने गृहस्थ जीवन में प्रवेश किया लेकिन बाबूजी से सम्बन्ध निरंतर रहे। पुत्री रत्न की प्राप्ति होने के पश्चात् उन्होंने बाबूजी को सूचित किया कि आप दादा बन गए हैं। बाबूजी उनके आदर्श थे उनकी मोबाइल स्क्रीन पर आज भी बाबूजी का फोटो मिलता है। इतना ही नहीं, भविष्य में उन्होंने अपनी बेटी को लॉ की पढाई के लिए बाबूजी (सुधीर फडके जी) के घर पर रखा। बाबूजी का यह उदाहरण हम भारतवासियों के लिए एक प्रेरणा है। यह SEIL के अंतर्गत किया गया प्रथम प्रयास था। SEIL का यह कार्य निरंतर चलता रहा। SEIL द्वारा भारतीय एकात्मता यात्राओं (SEILTOUR) का दौर आज भी जारी है। आज तक SEIL के अंतर्गत हजारों परिवार और छात्र-छात्राएं सहभागी हुए हैं। इन एकात्मता यात्राओं के दौरान पूर्वोत्तर के विद्यार्थी भारत के विभिन्न प्रान्तों की संस्कृति एवं परिवारों से रूबरू होते हैं। हमारे परिवार भी पूर्वोत्तर की संस्कृति से परिचय करते हुए संवाद स्थापित करते हैं। संवाद की यह कड़ी पारिवारिक संबंधों में निरंतर परिवर्तित हो रही है। पूर्वोत्तर के लोगों से एकता के भाव मजबूत करने की दृष्टि से 1978 में पहला SEIL TOUR सम्पन्न हुआ जिसमें श्री गेगांग अपांग भी

SEIL TOUR के प्रतिनिधि थे जो बाद में 24 वर्ष तक अरुणाचल के मुख्य मंत्री रहे।

लेखी संगमा गारो हिल्स की रहने वाली है जो गारो जनजाति से है। लेखी संगमा SEIL TOUR में शामिल हुई। भारत के विविध क्षेत्रों को जाना और आपसी सौहार्द की अनुभूति की। वहां से लौटने के बाद पादरी ने उसे कहा कि तुम हिन्दुओं के साथ क्यों गईं, वहां मत जाना, तो उसने दृढ़ता से जवाब दिया कि मुझे वहां किसी तरह की परेशानी नहीं हुई। मैंने अपने भारत को जाना और विविधता होते हुए भी एकता का अनुभव किया। वही लेखी संगमा SEIL की भावना से स्थाई रूप से जुड़ गई और उस समय जब उत्तर पूर्व में अलगाववाद का बोलबाला था, ये अलगाववादी लोगों को आतंकित कर रहे थे, ऐसे वातावरण में 15 अगस्त को तिरंगा फहराने के लिए लोगों को प्रेरित किया, उन्हें संबल दिया और स्वयं नेतृत्व करते हुए तिरंगा फहराया। इस प्रकार SEIL ने युवाओं में राष्ट्रीय भावना को जागृत कर सीमावर्ती क्षेत्रों में राष्ट्रवाद को मजबूत किया है भारत को मजबूत किया है।

सील टूर 'भारत को जानो' यात्रा के दौरान SEIL के प्रतिनिधि प्रत्येक वर्ष भारत का भ्रमण करते हैं। SEIL के 50 वर्ष पूरे होने पर भारत को जानने के लिए जब पूर्वोत्तर के विद्यार्थी काशी गए उन्होंने काशी विश्वनाथ मंदिर के दर्शन किये, मां गंगा की आरती की। जिन्होंने गंगा जी को मां का दर्जा दिया हो वह भारत से अलग कैसे हो सकते हैं। वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की कर्मभूमि झांसी में भी पूर्वोत्तर के विद्यार्थियों की यह यात्रा पहुंची जहां वे बुन्देलखंडी लोकनृत्यों के माध्यम से बुन्देलखंड की संस्कृति से परिचित हुए। झांसी की रानी लक्ष्मी बाई के किले पर जाकर जब उनकी वीरता का दर्शन किया तब उन्हें पूर्वोत्तर की रानी मां अर्थात् स्वातंत्र्य योद्धा रानी गाईंदिल्यु याद आई जिन्होंने अंग्रेजों की गुलामी से नागा समाज को मुक्त करने के लिए लड़ाई लड़ी, साथ ही नागालैंड को भारत से अलग करने की मंशा रखने वाले मीजो तथा नागा नेशनल काउंसिल (N.N.C.) के विरुद्ध भी सशस्त्र संघर्ष किया। अपनी हराक्का सेना का नेतृत्व करते हुए भारत के लिए लड़ने वाली रानी गाईंदिल्यु (रानी मां) को स्वतंत्रता के पश्चात् N.N.C. व अलगाववादी तत्वों ने भी मारने का षडयंत्र रचा था। रानी की सेना इन अलगाववादियों से भी लड़ी और 1964 में N.N.C. व भारत सरकार में युद्ध विराम की घोषणा के बाद रानी को सुरक्षा देकर भारत सरकार ने इतिहास की

पांच प्रमुख नारियों में रखते हुए उनके नाम से भी स्त्री शक्ति पुरस्कार प्रारंभ किया। यही पुरस्कार रानी लक्ष्मी बाई के नाम से भी दिया जाता है। झांसी की रानी की वीरता और बलिदान को ध्यान में रखकर राष्ट्र प्रेम की प्रेरणा के साथ झांसी से पूर्वोत्तर के विद्यार्थियों ने विदा ली। जम्मू, दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, त्रिवेंद्रम, उड़ीसा आदि विभिन्न स्थानों में जाकर पूर्वोत्तर के विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय एकात्मता के दर्शन किये।

SEIL के अंतर्गत असम गुवाहाटी में युवा विकास केंद्र (YVK) के माध्यम से पढाई अधूरी रहने वाले विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम चलाये जाते हैं साथ ही रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये जाते हैं। YVK के अंतर्गत शिक्षा सूचना केंद्र के माध्यम से पूर्वोत्तर के बाहर कहीं भी शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले विद्यार्थियों को व्यवस्था एवं जानकारी प्राप्त होती है। सर्वप्रथम 1965 में आये वे दो कार्यकर्ता जिनके मन में SEIL जैसे कार्य को करने का विचार आया उनमें से एक श्री पद्मनाभ आचार्य आज नागालैंड के राज्यपाल हैं यह संयोग ही है।

आजतक सील के माध्यम से भारत के हजारों परिवारों के पूर्वोत्तर से पारिवारिक सम्बन्ध स्थापित हुए हैं। यह परिवार साथ रहकर सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से पूर्वोत्तर से समरस हुए हैं। इन मेजबान परिवारों में रहे हजारों विद्यार्थी अर्थात् शेष भारत (पूर्वोत्तर के बाहर) के हजारों परिवार भारत के शक्ति केंद्र हैं और इन्हीं शक्ति केंद्रों के माध्यम से सारा उत्तर पूर्व, 'भारत मेरा घर' इस भावना से ओतप्रोत हो रहा है। प्रतिवर्ष शेष भारत से छात्रों के रूप में युवावर्ग आता रहेगा भारत को समझता रहेगा और वापस जाकर वहां राष्ट्रवाद की अलख जगाता रहेगा। विविधता में एकता के तत्व को मजबूत करेगा। सांस्कृतिक धरोहर को मजबूत करेगा। यह सिलसिला चलता रहेगा... अविरत चलता रहेगा और एक दिन वह आएगा जब अलगाववादियों के चंगुल से छूटे हुए वे लोग भी एक स्वर से गायेंगे.....

अनंत तारे गगन एक है,
अगणित किरणें सूर्य एक है,
विविध रंग हो चित्र एक है,
साज अलग पर सूर एक है,
भाषा बोली भले अलग हो,
समरसता का मर्म एक है,
विविध नाद का ब्रह्म एक है,
वेश अलग सन्देश एक है। ■

अभाविप की विकास यात्रा.....

| अजीत कुमार सिंह |

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् (अभाविप) की स्थापना एक ऐसी ऐतिहासिक परिघटना है, जिसे शब्दांकित करना संभव नहीं है। लगभग 1200 वर्षों की दासता के पश्चात 15 अगस्त 1947 को खंडित भारत विदेशी दासता से स्वाधीन हुआ। आजादी के इस ऐतिहासिक क्षण के गवाह बने महापुरुषों के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती वर्षों की गुलामी के बाद मिली स्वतंत्रता का उत्सव कहीं उन्माद न बन जाये, इसको लेकर थी। ठीक इसी समय आशंकाओं के समाधान की अनिवार्यता को लिये हुए राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लक्ष्य के साथ अभाविप का जन्म हुआ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत को स्वावलंबी बनाने के साथ - साथ वैश्विक स्तर पर उसकी भूमिका की चुनौती राष्ट्र के समक्ष थी। इस हेतु सर्वाधिक अपेक्षा उस वर्ग से थी जो शिक्षित होने के साथ - साथ ऊर्जावान भी था। अभाविप ने 1948 से ही कार्य करना शुरू कर दिया लेकिन छात्रों की ऊर्जा के नियोजन हेतु नौ जुलाई 1949 को विद्यार्थी परिषद् का विधिवत पंजीयन हुआ। भारत की चिति का अभिव्यक्त रूप यहां की संस्कृति के प्रति अनुराग, राष्ट्र की एकता और अखण्डता के सर्वोपरि होने का विश्वास तथा भारत को सशक्त, समृद्ध और स्वावलम्बी राष्ट्र के रूप में विश्वमालिका में उसे यथोचित स्थान दिलाने की महत्वाकांक्षा ने अभाविप के संगठन को गढ़ा है। राष्ट्र की अंतर्निहित चेतना को स्वर देने का काम परिषद् ने अपनी स्थापना के साथ ही शुरू कर दिया था। यही कारण था कि भारतीयकरण उद्योग से प्रारंभ हुई विचार यात्रा निरंतर प्रवाहमान रही।

छात्र संगठन होने के कारण विद्यार्थियों की नयी पीढ़ियां आती रहीं और पुरानी जाती रहीं। किन्तु विद्यार्थी परिषद् की विकास यात्रा जारी रही। राष्ट्र की मुख्य धारा

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत को स्वावलंबी बनाने के साथ - साथ वैश्विक स्तर पर उसकी भूमिका की चुनौती राष्ट्र के समक्ष थी। इस हेतु सर्वाधिक अपेक्षा उस वर्ग से थी जो शिक्षित होने के साथ - साथ ऊर्जावान भी था। अभाविप ने 1948 से ही कार्य करना शुरू कर दिया लेकिन छात्रों की ऊर्जा के नियोजन हेतु नौ जुलाई 1949 को विद्यार्थी परिषद् का विधिवत पंजीयन हुआ।

के साथ तादात्म्य निरंतर बना रहा जिसके कारण संगठन सतत वर्धमान बना रहा। विचारवंत शिक्षकों की शृंखला भी बनी रही जिसने विद्यार्थियों का योग्य मार्गदर्शन किया। साथ ही उनके व्यक्तिगत विकास की भी चिन्ता की। समाज जीवन के अनेकानेक क्षेत्रों में आज अभाविप के पूर्व कार्यकर्ताओं की जो मालिका दिखायी देती है उसके पीछे कार्यकर्ता विकास की अनूठी पद्धति का ही योगदान है। इस पद्धति की अनमोल कड़ी स्व. भाऊराव देवरस, दत्तोपंत ठेंगड़ी, रामशंकर अग्निहोत्री, ओमप्रकाश बहल, गिरिराज किशोर, प्रा. यशवंतराव केलकर, एम. बी. कृष्णराव, दत्ताजी डिडोलकर, नारायण भाई भंडारी, प्रा. बाल आप्टे, वेदप्रकाश नंदा आदि युवाओं ने अपने उद्यम से राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के पुनीत अभियान को अखिल भारतीय स्वरूप प्रदान किया।

आज सात दशक बाद सिंहावलोकन करने पर अभाविप के खाते में अनेक उपलब्धियां दिखायी देती हैं। इन्हें हम दो भागों में बांट सकते हैं - प्रथम, राष्ट्र के दिशा निर्धारण में हमारा योगदान और द्वितीय, एक संगठन के रूप में हमारी उपलब्धियां। किसी राष्ट्र अथवा समाज को प्रभावी दिशा देने का कार्य कुछ व्यक्ति, संस्थाएं अथवा व्यक्ति समूह किया करते हैं। वैसे तो समाज की दिन-प्रतिदिन की गतिविधियां किसी न किसी प्रकार से चलती रहती हैं परंतु विद्यार्थी परिषद् ने असंगठित युवा शक्ति को संगठित व सुसंस्कारित कर देश को नई दिशा देने का काम किया है। परिषद् में एक सूत्र वाक्य है जिसे कार्यकर्ता बार-बार सुनते हैं - 'सभी कार्यकर्ता महत्वपूर्ण, अपरिहार्य कोई नहीं...।' यह वाक्य कार्यकर्ता पद की गरिमा को स्थापित करता है एवं कार्यकर्तापन के अहंकार पर चोट करता है। जब संगठन में कोई कार्यकर्ता अपने को अपरिहार्य मानने लगता है या जाने-अनजाने में अपने को अपरिहार्य बना लेता है, ये दोनों ही स्थितियां संगठन के लिए ठीक नहीं हैं। अभाविप ने अपने लक्ष्य की

प्राप्ति के लिए सैद्धांतिक भूमिका अपनाई, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण थी रचनात्मकता। रचनात्मक कार्य प्रथम पुरुषी मानसिकता से संभव होता है। प्रथम पुरुषी मानसिकता अर्थात् पहले कोई कार्य स्वयं करना फिर दूसरों को करने के लिए कहना। रचनात्मक कार्य का प्रत्यक्ष रूप होता है रचनात्मक गतिविधियां।

लोकतंत्र पर काला धब्बा आपातकाल

1973 के अंत में गुजरात में नवनिर्माण आंदोलन प्रारंभ हुआ। एक इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्रावास में की गई भोजन शुल्क वृद्धि के विरुद्ध प्रारंभ हुआ आंदोलन आनन-फानन में महंगाई, भ्रष्टाचार व कुशासन के विरुद्ध प्रदेशव्यापी आंदोलन बन गया, जिसका नेतृत्व विद्यार्थी परिषद् ने किया। गुजरात के पश्चात कुछ ही महीनों में फरवरी-मार्च 1974 में बिहार आंदोलन शुरू हो गया। महंगाई, भ्रष्टाचार, कुशासन, बेरोजगारी, शिक्षा आदि के विरोध में यह आंदोलन अभाविक के प्रयासों से ही शुरू हुआ। यही आंदोलन आगे चलकर राष्ट्रीय आंदोलन में परिवर्तित हो गया और जयप्रकाश नारायण के सक्रिय सहभाग और नेतृत्व के कारण यह आंदोलन जयप्रकाश आंदोलन कहलाया। सत्तर-अस्सी के दशक में अभाविक के क्षेत्रीय संगठन मंत्री एवं राष्ट्रीय मंत्री रह चुके प्रख्यात पत्रकार रामबहादुर राय बताते हैं कि इंदिरा सरकार के तानाशाही रवैये के खिलाफ संपूर्ण क्रांति की पटकथा तो कर्णावती (अहमदाबाद) अधिवेशन में लिख दी गई थी। अभाविक के इस तीन दिवसीय अधिवेशन में 4, 5 और 6 नवंबर 1973 को देश भर से आए प्रतिनिधियों ने व्यापक प्रश्नों पर सतत आंदोलन का संकल्प लिया।

राष्ट्रीय स्तर पर जब एक नीति निर्धारित हो गई तो उसे अपने-अपने क्षेत्र में कार्यरूप देने की जिम्मेदारी राज्य संगठन पर आई। अभाविक, बिहार ने इसकी अगुवाई की। 23, 24 दिसंबर 1973 को तत्कालीन बिहार के धनबाद (अब झारखंड में है) में प्रांत स्तरीय सम्मेलन आयोजन किया गया, जिसमें लगभग बारह सौ प्रतिनिधियों ने भाग लिया। किसी भी प्रांत स्तरीय सम्मेलन की यह उपस्थिति

अपने-आप में एक भविष्यगत आश्वासन थी। वह परिवर्तन की आकुलता का प्रतीक भी थी। लोकनायक जयप्रकाश नारायण के समग्र क्रांति के आह्वान पर आपातकाल जैसी परिस्थितियों से लड़ने की कोई सुव्यवस्थित योजना नहीं थी। हां, एक खाका जरूर था। उसमें अन्य संगठनों की तुलना में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् की भूमिका सबसे अहम थी। अपनी सरकार के खिलाफ बढ़ते जनक्रोश को देखते हुए इंदिरा गांधी ने दबाव डालकर 25 जून 1975 की आधी रात को तत्कालीन राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद से आपातकाल के आदेश पर हस्ताक्षर करवा लिया और 26 जून को पूरे भारत में आपातकाल लग गया। प्रदर्शनकारियों को नजरबंद कर लिया गया, प्रेस पर पाबंदी लगा दी गई, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ समेत छब्बीस संगठनों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। हालांकि परिषद् पर कोई प्रतिबंध नहीं था परंतु कार्यकर्ताओं को कार्य करने की छूट भी नहीं थी। परिषद् के कार्यकर्ताओं ने भूमिगत होकर भारतीय जनमानस में लोकतंत्र के प्रति चेतना जगाने का काम किया। इस दौरान कई कार्यकर्ता जेल भी गये। अन्य संगठनों की अपेक्षा विद्यार्थी परिषद् अपेक्षाकृत अधिक संगठित और सुसंबद्ध था, जिस कारण सुनियोजित तरीके से आंदोलन चलता रहा। अखिरकार 21

1973 के अंत में गुजरात में नवनिर्माण आंदोलन प्रारंभ हुआ। एक इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्रावास में की गई भोजन शुल्क वृद्धि के विरुद्ध प्रारंभ हुआ आंदोलन आनन-फानन में महंगाई, भ्रष्टाचार व कुशासन के विरुद्ध प्रदेशव्यापी आंदोलन बन गया, जिसका नेतृत्व विद्यार्थी परिषद् ने किया। गुजरात के पश्चात कुछ ही महीनों में फरवरी-मार्च 1974 में बिहार आंदोलन शुरू हो गया।

मार्च 1977 को लोकतंत्र का सूरज फिर निकला। आम चुनाव हुए, कांग्रेस पार्टी की करारी हार हुई, जनता पार्टी की सरकार बनी। कई संगठनों ने सरकार में सहभाग लिया, विद्यार्थी परिषद् को भी सरकार में शामिल होने का निमंत्रण मिला लेकिन विद्यार्थी परिषद् ने अपनी प्रतिबद्धता को दोहराते हुए कहा कि हम दलगत राजनीति से ऊपर रहने वाला छात्र संगठन हैं। इस प्रकार विद्यार्थी परिषद् ने पूरे आंदोलन को चलाने के बाद भी राजनीति से अपने - आप को अलग रखा, उसी का परिणाम है कि आज देश के अधिकतर विश्वविद्यालयों में परिषद् का नेतृत्व है।

सामाजिक समरसता और अभाविक

अभाविक का स्पष्ट मानना है कि समरस समाज के बिना राष्ट्र का विकास असंभव है। भारतीय पुरातन परंपरा

पर अगर नजर डालें तो पता चलता है कि भारतीय समाज आरंभ से ही समरस रहा है। कालांतर में विदेशी आक्रांताओं के द्वारा हमारी सामाजिक समरसता के ताने-बाने को तोड़ने का प्रयास किया गया था। इन आक्रांताओं ने न केवल हमारी समरसता को तोड़ा बल्कि हमारे समाज को जातिगत भेद में बांट दिया और इसका ठीकरा भी धर्म पर फोड़ने का कुत्सित प्रयास किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात अपने स्थापना काल से ही अभावपि ने इसे चुनौती के रूप में लिया। आजादी के बाद देश में आरक्षण के विरोध में अनेक आंदोलन हुए, लेकिन अभावपि ने आरक्षण का पक्ष लिया। आरक्षण विरोध की दहकती ज्वाला को देखते हुए विद्यार्थी परिषद् ने 1981 में पटना में आरक्षण पर एक बड़ी संगोष्ठी आयोजित की। संगोष्ठी में समाज के सभी वर्गों के चिंतक, साहित्यकार, बुद्धिजीवी, पत्रकार, राजनेता और विद्यार्थी वर्ग ने सहभाग किया। इस दौरान सभी ने सर्वसम्मति से आरक्षण के पक्ष में प्रस्ताव पारित किये। इसी प्रकार मराठवाड़ा विश्वविद्यालय के नाम परिवर्तन को लेकर समाज, दो धड़ों में विभाजित हो चुका था। अभावपि ने स्थिति को भांपते हुए समाज को टूटने से बचाने के उद्देश्य से 1978 से 1993 तक लगातार आंदोलन किया एवं महाराष्ट्र प्रांतीय अधिवेशन में प्रस्ताव पारित कर 1986 में वीर सावरकर की जन्म शताब्दी के अवसर पर पूरे प्रदेश में समता ज्योति यात्रा निकाली। 1990 में नाम परिवर्तन तथा सामाजिक समता का विषय लेकर पूरे मराठवाड़ा में संवाद स्थापित करने का काम किया गया। 1990 में मंडल आयोग की रिपोर्ट लागू करने के बाद 19 सितंबर 1990 में दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र एस.एस. चौहान ने आरक्षण के विरोध में आत्मदाह किया। चौहान के आत्मदाह की घटना पूरे देश में आग की तरह फैल गई। देश जल रहा था, अकेले बिहार में सैकड़ों लोगों की जानें जा चुकी थीं। ऐसे में शांति के प्रयास हेतु सर्वप्रथम परिषद् आगे आयी फलस्वरूप समाज में फैले वैमनस्य पर बहुत हद तक काबू पाया गया।

90 के दशक में बिहार में जंगलराज स्थापित हो चुका था। डकैती, लूट-पाट, अपहरण तो उद्योग बन चुका था,

उस समय मानवता को लहूलुहान कर देने वाली घटनाएं सामने आने लगी, सामूहिक नरसंहार और विशेष रूप से जातीय नरसंहार ने भयानक रूप ले लिया। जहानाबाद में घटे हत्याकांड ने सबको स्तब्ध कर दिया। जातीय हिंसा की आग में झुलस रहे बिहार में सबसे पहले 'अभावपि ने जाति-तोड़ो, हिंसा छोड़ो' के नाम से सप्ताह भर गांव-गांव में पदयात्रा निकाल कर सामाजिक सद्भाव को पुनर्स्थापित करने का प्रयास किया। अभावपि के प्रयास के कारण समाज में फिर सौहार्द्र स्थापित हो पाया। इस तरह के अनेकों उदाहरण हैं जिससे पता चलता है कि परिषद् ने समरस समाज के लिए अकथनीय प्रयास किए। वर्ष 2007 में अभावपि की याचिका पर उच्च न्यायालय द्वारा निजी तकनीकी व्यावसायिक शिक्षा संस्थानों में अनुसूचित जाति, जनजाति और पिछड़े वर्ग के छात्रों को आरक्षण देने का प्रावधान किया गया। 6 दिसंबर यानी बाबा साहेब के महापरिनिर्वाण दिवस को अभावपि सामाजिक समरसता दिवस के रूप में मनाती है।

बीसवीं शताब्दी का आठवां दशक चल रहा था। दशक के अंत में ही असम आंदोलन भी प्रारंभ हो गया। फिर उसके बाद केन्द्र सरकार द्वारा बोफोर्स तोप सौदे में दलाली ख़ाए जाने, कश्मीर में छ़ाए आतंकवाद तथा राजनीतिक भ्रष्टाचार व अपराधीकरण जैसे मुद्दों पर कुछ आंदोलन हुए। विश्व के अन्य भागों में सातवें दशक के पश्चात भी कई आंदोलन हुए।

बांग्लादेशी घुसपैठ के विरुद्ध आंदोलन

बीसवीं शताब्दी का आठवां दशक चल रहा था। दशक के अंत में ही असम आंदोलन भी प्रारंभ हो गया। फिर उसके बाद केन्द्र सरकार द्वारा बोफोर्स तोप सौदे में दलाली ख़ाए जाने, कश्मीर में छ़ाए आतंकवाद तथा राजनीतिक भ्रष्टाचार व अपराधीकरण जैसे मुद्दों पर कुछ आंदोलन हुए। विश्व के अन्य भागों में सातवें दशक के पश्चात भी कई आंदोलन हुए। चीन में प्रजातंत्र की स्थापना के लिए राजधानी पेईचिंग में 1989 में थ्यानानमेन चौक पर छात्रों ने अभूतपूर्व प्रदर्शन किया। देश विश्व के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने के लिए प्रयत्नशील था, देश के युवा अपने राष्ट्र को वैश्विक पंक्तियों में अग्रणी स्थान पर देखना चाहते थे। इसी दौरान देश के सीमावर्ती राज्यों में बहुतायत मात्रा में बांग्लादेशी घुसपैठ कर देश में घुस रहे थे। बांग्लादेशी घुसपैठियों के कारण सभी सीमावर्ती राज्यों से सटे जिले मुस्लिम बहुल होने लगे। अभावपि को चिंता सताने लगी कि यह क्रम लगातार जारी रहा तो देश को पुनः खंडित होने से कोई रोक नहीं सकता

। अभाविप ने 1979 से बांग्लादेशी घुसपैठ का विरोध करना शुरू कर दिया। इधर असम में बांग्लादेशी घुसपैठ के विरुद्ध ऑल असम स्टूडेंट्स यूनियन(AASU) द्वारा वृहद आंदोलन छेड़ा गया तो विद्यार्थी परिषद् ने इसे राष्ट्रीय समस्या बताते हुए जनजागरण अभियान शुरू कर दिया। अक्टूबर 1983 में गुवाहाटी के जजेज फील्ड में सत्याग्रह किया गया। सत्याग्रह के दौरान हुए लाठीचार्ज में अनेकों कार्यकर्ता गंभीर रूप से घायल हो गये। बाद में पुलिस द्वारा तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय महामंत्री को गिरफ्तार कर लिया गया। वर्ष दर वर्ष आंदोलन चलते रहे.... वर्ष 2006 में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जयंती पखवाड़े पर राष्ट्रीय जनजागरण अभियान चलाकर लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया गया। जब सरकार की ओर से कोई सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं आयी तो अभाविप ने बांग्लादेशी घुसपैठ के खिलाफ शंखनाद कर “चलो चिकेन नेक” का नारा दिया। बिहार के किशनगंज में देश भर से 40 हजार से अधिक छात्र-युवा एकत्र हुए। अभाविप के प्रयास के बाद ही पहली बार तत्कालीन गृहमंत्री पी.चिदंबरम ने बांग्लादेशी घुसपैठ की बात स्वीकार की। आज असम में एनआरसी के तहत लाखों अवैध बांग्लादेशी नागरिकों की पहचान की गई है।

सामाजिक अनुभूति के बहाने संवेदना जगाने की अनोखी कोशिश

अभाविप के द्वारा गत कुछ वर्षों से सामाजिक संवेदना स्थापित करने के उद्देश्य से सामाजिक अनुभूति कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम के तहत कार्यकर्ता समाज के साथ आत्मीय संबंध स्थापित कर रहे हैं। कार्यकर्ता सामाजिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों में जाकर उनकी स्थिति का अध्ययन कर रहे हैं। इस अनोखी पहल से कार्यकर्ताओं को समाज को करीब से देखने व जानने का मौका मिल रहा है। वर्तमान युवा पीढ़ी के लिए यह अभियान प्रेरणादायी साबित हो रहा है। जिस गांव को युवा-पीढ़ी गुगल, अखबार, टेलीविजन, इंटरनेट इत्यादि के माध्यम से जान रहे थी उसे स्वयं गांव पहुंचकर रोमांचित हो रही है। गांव में रहने वाले परिवारों के जनजीवन का प्रत्यक्ष अनुभव कर रही है।

अभाविप में छात्रा सहभाग

अभाविप में छात्रों के साथ छात्राओं का सहभाग प्रारंभ से रहा है। परिषद् की स्थापना के समय जो परिस्थितियां

थीं उस समय छात्र-छात्राओं का सामूहिक रूप से काम करना आसान नहीं था। छात्राओं के स्वतंत्र विद्यालय काफी मात्रा में थे जिस कारण दोनों को एक साथ काम करने की आदत कम थी फिर भी अभाविप ने छात्राओं को संगठन में जोड़ा और उन्हें अहम जिम्मेदारी दी। प्रारंभिक दौर में छात्राओं का सहभाग गिनी-चुनी जिम्मेदारियों तक सीमित रहा लेकिन धीरे-धीरे यह चित्र बदलने लगा। छात्रों की तरह पूर्णकालिक जीवन के लिए छात्राएं भी निकलने लगीं। छात्राओं ने छात्र कार्यकर्ताओं के साथ कंधे से कंधा मिलाकर पहली पंक्ति में कार्य करना प्रारंभ किया। आज छात्राओं द्वारा आंदोलन का नेतृत्व करना, संगोष्ठी आयोजित करना, नुक्कड़ नाटक करना, भाषण देना आम बात हो चुकी है। भगिनी निवेदिता सार्धशती (150वीं जयंती) के अवसर पर भारत के विभिन्न राज्यों से आई 96 छात्राओं ने परिषद् कार्य के लिए विस्तारक/पूर्णकालिक के रूप काम करने का निश्चय किया। परिषद् में आज, छात्राएं राष्ट्रीय मंत्री, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, कई राज्यों में प्रांत मंत्री, प्रांत अध्यक्ष/उपाध्यक्ष, आयाम प्रमुख के रूप में दायित्व का निर्वहन कर रही है। छात्राओं को निडर बनाने के लिए परिषद् के द्वारा मिशन साहसी का अभियान चलाया गया, इसके तहत गत 30 अक्टूबर से 3 नवंबर तक सात लाख से अधिक छात्राओं ने शौर्य का प्रदर्शन किया। परिषद् एक ऐसा अभिनव छात्र संगठन है जिसमें कार्यकर्ता के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास किया जाता है।

उल्लेखनीय है कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् अपने विविध आयामों जैसे - विश्व विद्यार्थी युवा संगठन (WOSY), राष्ट्रीय कला मंच, एग्रीविजन, मेडीविजन, स्पर्धा-डिपैक्स, सृजन, सृष्टी, साविष्कार लाइव, विद्यार्थी विकास, विकासार्थ विद्यार्थी(SFD), अंतरराज्यीय छात्र जीवन दर्शन (SEIL), थिंक इंडिया, आदि के जरिये पूरे देश को एक सूत्र में बांधने का काम कर रही है। चाहे देश के लोगों के बीच राष्ट्रवाद की भावना विकसित करने का काम हो, भारत अनुरूप शिक्षा की बात हो, राष्ट्रीय प्रश्नों पर आंदोलन करने की जरूरत, या फिर शैक्षिक परिवार की संकल्पना की बात हो अभाविप हर मुद्दे पर प्रखर होकर कार्य कर रही है। अभाविप की स्वीकार्यता पूरे देश के छात्रों के बीच स्थापित है। स्वाधीन भारत के जीवन में जिन्होंने सार्थक एवं प्रभावी भूमिका निभाई है और आज भी निभा रहे हैं, उन संगठनों में से एक है अभाविप। ■

(लेखक “राष्ट्रीय छात्रशक्ति” पत्रिका के सहायक संपादक हैं।)

Dr. S. Subbiah and Ashish Chauhan Re-elected as National President and National General Secretary of ABVP

Dr. S. Subbiah (Chennai) and Ashish Chauhan (Mumbai) unanimously re-elected as National President and General Secretary respectively of ABVP, the Premier student organization of the nation for the next consecutive Session 2018-19. This is announced by election officer Sushree Mamta Yadav at ABVP Central office, Mumbai. The term of both the newly elected office bearers will be for one year. They

will take charge of their responsibilities in 64th National Conference of ABVP scheduled to begin from 27-30 Dec. 2018 at Karnavati (A h m a d a b a d), Gujrat. Prof. Dr. Subbiah hails from Thoothukudi district in Tamil Nadu. Right from student life, he has been active in

student movement. Noted Cancer Specialist Dr Subbiah has done MBBS and further earned his M.S. & M.Ch. in Surgical Oncology and is presently working as Professor & HoD, Department of Surgical Oncology at Kilpauk Medical College, Chennai. He has performed more than 3000 surgeries, published 50 medical paper in National & International Journals and had mentored 50 students in super speciality of Surgical Oncology. He is member of many associations of Surgical Oncology on national level. Inclination for serving society through is true to you from your student age, and had deep interest for development of education and history of Tamil Nadu. He has served in many



responsibilities in ABVP since 1986 including Tamil Nadu State President, and is National Vice-President since 2015. He has been re-elected as National President for this session 2018-19. Shri Ashish Chauhan is native to Shimla district of Himachal Pradesh. He has done BSc, BJMC (Journalism) and MBA. He is active in ABVP since 2003. He has been President of Students' Union of Govt College, Seema, District Convener, University Unit Secretary & President, District Organising Secretary, National Secretary, He Convener of Think India, Mumbai Organising Secretary and Secretary General of India-China Youth Dialogue, he is based in Mumbai. He has effectively led nationalistic thought against left forces on campuses in Himachal Pradesh. He has successfully led many agitations including Private Universities in Himachal, and for last seven years in All India Education Institutes (IITs, IIMs, NLUs etc.) for quality education and students' issues and in Anti-corruption agitation in 2012, Against NIFT Fee Hike in 2013 also the nationwide agitation for Fellowship Hike in 2014. He has member of Indian Youth Delegation to China under Ministry of Youth Affairs & Sports, Govt of India. Also, he has visited US under Department of State's Legislative Fellows program 2016. He has spoken and presented papers on Youth, Education and India-China relations. He has been re-elected National General Secretary for this session 2018-19. ■



संदीप जोशी को मिला वर्ष 2018 का प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार



जा लोर (राजस्थान) के सामाजिक कार्यकर्ता संदीप जोशी का चयन प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार 2018 हेतु किया गया है। संदीप को यह पुरस्कार शासकीय विद्यालयों में शिक्षा में नवाचार के सफल सृजन एवं क्रियान्वयन हेतु किये जा रहे कार्यों की प्रशंसा और सम्मान हेतु दिया गया है। बता दें कि युवा पुरस्कार अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के शिल्पकार प्रा. यशवंत राव केलकर के स्मृति में प्रतिवर्ष दिया जाता है, पिछले वर्ष यह पुरस्कार बैंगलुरु के रहने वाले आर. गोपीनाथ को बच्चों की देखभाल सुरक्षा एवं विकास हेतु दिया गया था। यह अभाविप तथा विद्यार्थी निधि न्यास का संयुक्त उपक्रम है, जो शिक्षा और छात्रों के उत्थान के लिए प्रतिबद्ध है।

संदीप जोशी को वर्ष 2018 का युवा पुरस्कार गुजरात के कर्णावती(गुजरात) में होने वाले अभाविप के 64 वें राष्ट्रीय अधिवेशन (27 दिसंबर से 30 दिसंबर 2018) में दिया जायेगा। विभिन्न समाजपयोगी काम करने वाले युवा सामाजिक कार्यकर्ताओं के कार्य को प्रोत्साहन देने हेतु समाज के सम्मुख लाना और ऐसे युवाओं के प्रति समूचे वर्ग की कृतज्ञता प्रकट करना एवं युवाओं में ऐसे काम करने की प्रेरणा उत्पन्न करना इस युवा पुरस्कार का प्रयोजन है। इस पुरस्कार में नगद

राशि एक लाख प्रमाणपत्र एवं स्मृति चिह्न समाविष्ट है। श्री संदीप जालोर के समान्य परिवार से आते हैं। इन्होंने आदर्श राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, रेवत जिला जालोर(राजस्थान) में इतिहास विषय के व्याख्याता के साथ - साथ सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं। संदीप ने प्राथमिक शिक्षा में वैज्ञानिक दृष्टि तथा बच्चों में प्रयोगशीलता को प्रोत्साहित करने हेतु प्राथमिक विद्यालयों में प्रयोगशालाएं प्रारंभ की है। शिक्षा में मूल्यों एवं राष्ट्रप्रेम जागृत करने हेतु 'भारत दर्शन गलियारा' तथा विद्यार्थियों के बस्तों का भार कम करने हेतु 'बस्ता मुक्त दिन' प्रारंभ किया। इसी के साथ छात्राओं की सुरक्षा और सम्मान हेतु 'कन्या पूजन कार्यक्रम' और सामाजिक समरसता के मान से प्रेरित संपूर्ण समाज के सहयोग से 'समरस मां सरस्वती मंदिर का निर्माण किया'। जिससे प्रेरित होकर राजस्थान एवं मध्यप्रदेश सरकार सहित सात राज्यों ने इन प्रयोगों को स्कूली शिक्षा हेतु लागु किया है और आज राजस्थान के 65 विद्यालयों में संदीप जोशी के द्वारा सृजित विचार कृति के रूप में फलीभूत हुए हैं। अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष एस. सुबैय्या एवं राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान ने प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार प्राप्तकर्ता संदीप जोशी को बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दी। ■

सामाजिक समरसता का दर्शन और चिंतन

। धर्मेन्द्र कुमार शाही ।

‘सा

माजिक समरसता’ का दर्शन और चिंतन समता, समानता और बंधुत्व का दर्शन और चिंतन है। यह एक ऐसा चिंतन है, जिसकी चर्चा करना, चेतना के स्तर पर स्वीकार करना एवं इसे व्यवहारिक रूप में क्रियान्वित करना आज समाज एवं राष्ट्र की मूलभूत आवश्यकता है।

इसके लिए हमें सर्वप्रथम ‘सामाजिक समरसता’ के अर्थ का व्यापक अध्ययन करना आवश्यक है।

विभेद नहीं एकत्व का विचार

समरसता विभेद नहीं एकत्व का विचार है। समरसता का अर्थ है, सम-रस या एक-रस हो जाना (आपस में इस प्रकार घुल-मिल जाना कि विभेद कर पाना संभव नहीं हो, सब को अपना लेना, इस प्रकार स्वीकार कर लेना कि अंतर कर पाना संभव नहीं हो) समाज संगठन यह आदर्श स्वरूप है। समरसता का दर्शन केवल आध्यात्मिक दर्शन नहीं, व्यवहारिक चिंतन भी है। यह अद्वैत की प्रतिष्ठा करता है, भेदभाव का सर्वत्र नाश करता है एवं समस्त सदाचारों की नींव का निर्माण करता है।

समरसता मानव समाज की एकता का मूल सिद्धांत है। यह एक सर्वमंगलकारी दार्शनिक चिंतन है। इस चिंतन का केंद्र बिंदु मनुष्य का कल्याण है। यह विचार एकता और बंधुत्व (भ्रातृत्व एवं भगिनीत्व) के जोड़ने वाली भावना से उत्पन्न विचार है। (यह आधारभूत मानवीय गुणों – प्रेम और करुणा तथा सहयोग और सहानुभूति से पोषित होता है) प्रेम और करुणा का व्यवहार (संवेदना) केवल आदर्शवाद का एक लक्षण मात्र नहीं है, अपितु यह मानव व मानवता के कल्याण को सुनिश्चित करने का आवश्यक तत्व है। यह समाज में सौहार्द और सदभावना का निर्माण करता है। दूसरी ओर सहयोग और सहानुभूति, दूसरों के और स्वयं अपने आप के सर्वश्रेष्ठ हितों को साधने का सबसे प्रभावशाली उपाय है। यह आगामी विकास का परिचायक है।

सामाजिक जीवंतता और गतिशीलता का आधार

यदि व्यवहारिक अर्थ देखें तो सामाजिक समता का अर्थ

है - सभी को अपने समान समझना। सृष्टि में सभी मनुष्य एक ही ईश्वर की संतान है और उनमें एक ही चैतन्य विद्यमान है, अर्थात् सभी मनुष्य तत्त्वतः समान हैं, इस बात को हृदय से स्वीकार कर लेना समरसता का आवश्यक तत्व है। इस आधार पर जातिगत भेदभाव एवं अस्पृश्यता का समूल (जड़मूल से) उन्मूल कर लोगों में परस्पर प्रेम एवं सौहार्द को बढ़ाना तथा समाज के सभी वर्गों एवं वर्णों के मध्य एकता स्थापित करना समरसता निर्माण है। इस तरह हम कह सकते हैं कि ‘सामाजिक समरसता’ सामाजिक जीवंतता और गतिशीलता का आधार है। इस तरह ‘सामाजिक समरसता’ अनिवार्यतः एक आदर्श समाज निर्माण का व्यावहारिक सिद्धांत है।

‘सामाजिक समरसता’ की नैतिक एवं सामाजिक अंतरदृष्टि

‘सामाजिक समरसता’ मौलिक रूप से समान और एक दूसरे के प्रति समर्पित समाज की संकल्पना है। यदि देखा जाए तो समरसता का सिद्धांत भारतीय दर्शन में सर्वत्र लक्षित होता है। सनातन भारतीय संस्कृति में कभी भी किसी के साथ किसी भी तरह का भेदभाव स्वीकार नहीं किया गया है। भारतीय शास्त्रों में प्राचीनकाल से ही ‘आत्मवत् सर्वभूतेषु’ का उपदेश दिया गया था। वेदों में भी जाति के आधार पर नहीं बल्कि कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था बतायी गयी है। इनमें भी जाति या वर्ण के आधार पर किसी भेदभाव का उल्लेख नहीं है।

धर्मशास्त्रों में कहा गया है - जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद्विज उच्यते। जन्म से सभी मनुष्य असंस्कृत होने के कारण शूद्र हैं, जब उन्हें संस्कारित किया जाता है तब संस्कार रूपी द्वितीय जन्म से वे द्विजत्व को प्राप्त करते हैं। महर्षि व्यास, महर्षि वाल्मीकि, महात्मा विदुर ने अपनी जाति के आधार पर नहीं, अपने गुण तथा कर्म से समाज में सम्मान प्राप्त किया था।

परंतु समय के साथ-साथ इन व्यवस्थाओं में अनेक विकृतियां आती गईं।

परम्परा का पुनर्मूल्यांकन

जिस दिन से भारतीय समाज में जन्मना वर्ण-व्यवस्था का जन्म हुआ और विभिन्न जाति वर्गों के बीच परस्पर

आदान-प्रदान बन्द हुआ, समाज में 'विभेद' की खाई गहरी होती गई। परिणामस्वरूप अनेक कुरीतियों एवं कुप्रथाओं का जन्म हुआ। इन सबके कारण जातिगत भेद-भाव, छूआछूत आदि की प्रवृत्ति बढ़ती गई। सामाजिक अत्याचार या उत्पीड़न, मंदिरों में प्रवेश पर रोक इसकी परिणति थी। धीरे धीरे समाज में इन कुप्रथाओं की जड़ें इतनी सुदृढ़ हो गईं कि इनका पूर्ण रूप से उन्मूलन करना एक बहुत बड़ी चुनौती बन गयी।

समता एवं समानता का विचार

सामाजिक व्यवस्था में 'समता' एक श्रेष्ठ तत्व है। सामाजिक विषमता को दूर करने और समता की पुनःस्थापना के लिए अनेक वर्षों से कई संत-महापुरुष, ऋषि-मुनि एवं समाज-सुधारकों ने निरन्तर प्रयास किया है। महात्मा बुद्ध समता के महान उपदेशक थे। मानव की समता उनके महान संदेशों में से एक है। बुद्ध ने अखिल मानवता को समता का संदेश दिया और अन्याय पीडित वर्गों, विशेषतः शूद्रों और स्त्रियों को समान स्थान दिया।

संत कबीर और संत रविदास ने जातिगत भेद-भाव, ऊंच-नीच, छूआछूत, धर्म-आधारित आडम्बर तथा पाखण्ड, रूढ़िवाद, अंधविश्वास आदि कुप्रथाओं पर गहरा प्रहार किया और सामाजिक विषमता को दूर करने और समता की पुनःस्थापना का प्रयास किया। नारायण गुरु व पेरियार रामास्वामी, महात्मा ज्योतिबा फुले आदि संतों ने सामाजिक-सांस्कृतिक पुनर्जागरण का कार्य किया।

बाबा साहब भीम राव आंबेडकर का मानना था कि अगर हिन्दू धर्म अस्पृश्यता का धर्म है, तो उसे समानता का धर्म बनना चाहिए। डा. आंबेडकर ने इसे संवैधानिक रूप दिया जिससे समाज में समानता लाने के प्रयासों को काफी सफलता भी मिली है।

सामाजिक समरसता और विद्यार्थी परिषद्

विद्यार्थी परिषद् न केवल सामाजिक आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करता है बल्कि उसे

साकार करने का भी प्रयास करता है। हम समरस समाज की स्थापना के प्रति कृतसंकल्प हैं। इसलिए विद्यार्थी परिषद् सामाजिक समरसता स्थापित करने के लिए निरन्तर प्रयासरत है। सामाजिक समरसता विद्यार्थी परिषद् की प्रमुख गतिविधियों में से एक है और परिषद् के कार्यकर्ता इसे बढ़ाने की दिशा में निरन्तर कार्य कर रहे हैं। परिषद् विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से छात्र-छात्राओं में सामाजिक समरसता, सामुदायिक सौहार्द तथा बंधुत्व की भावनाओं को विकसित करने का कार्य करता है। विद्यार्थी परिषद् द्वारा 14 अप्रैल, बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जन्म दिवस पर विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। परिषद् डॉ. भीमराव अम्बेडकर की पुण्यतिथि 6 दिसम्बर को सामाजिक समरसता

दिवस के रूप में मानती है। विद्यार्थी परिषद् ने सामाजिक समरसता के लिए अनेक आन्दोलन किए हैं, साथ ही अनुसूचित जाति और जनजाति के समस्याओं के समाधान के लिए भी आंदोलन किया है। 2007 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् की याचिका पर उच्च न्यायालय द्वारा निजी तकनीकी व्यावसायिक शिक्षा संस्थानों में अनुसूचित जाति, जनजाति, और पिछड़े वर्ग के छात्रों को आरक्षण देने का प्रावधान किया गया।

विद्यार्थी परिषद् द्वारा किया जाने वाला सामाजिक समरसता का यह कार्य एक सामाजिक आन्दोलन का रूप ले चुका है। ऊंच-नीच और अस्पृश्यता के भेदभाव का अंत एक जागरूक समाज के द्वारा ही किया जा सकता है। लोगों को जागरूक करने के साथ ही उनमें प्रेम एवं अपनत्व का भाव जगाने की आवश्यकता है, तभी समाज में वास्तविक समरसता का भाव उत्पन्न होगा। इससे राष्ट्रीय एकता स्थापित हो सकेगा। जब जातिगत भेदभाव से ऊपर उठकर सभी लोग राष्ट्र की उन्नति में सहयोग करेंगे, तब निःसंदेह राष्ट्र का उत्कर्ष होगा।

संघ और उसके अनुसांगिक संगठनों के कार्यों और कार्यक्रमों की प्रासंगिकता पर प्रश्नचिन्ह लगाना सर्वथा अप्रासंगिक है। ■

(लेखक अभाविप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं।)

विख्यात गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन

। अतुल भाई कोठारी।

श्री

निवास रामानुजन गणित के क्षेत्र में ध्रुव तारे के समान आज भी चमक रहे हैं। 98 वर्षों के बाद भी उनके द्वारा 32 वर्ष 4 मास एवं 4 दिन के छोटे से जीवनकाल में गणित के क्षेत्र में जो कार्य किया गया उसे सिद्ध करने के लिए दुनिया के गणितज्ञ आज भी प्रयासरत हैं।

रामानुजन ने 13 वर्ष की उम्र से ही अनुसंधान कार्य शुरू किया था एवं 15 वर्ष की उम्र में स्वयं किये गये कार्य को नोटबुक में लिखने की शुरुआत की थी। एक प्रकार से कहना है तो वह गणित को लेकर ही जन्मे थे, गणित के लिए ही जीवन भर समर्पण भाव से कार्य किया और आमरण वह इसी कार्य में लगे रहे। वे बहुत अधिक बिमार थे, उस समय प्रो. हार्डी उनसे मिलने के लिए गये। जाते समय रास्ते में वह सोच रहे थे कि रामानुजन का स्वास्थ्य खराब होने के कारण आज गणित की कोई बात नहीं करूंगा। कुछ हल्की – फुल्की बातें करना अच्छा होगा। जब वे रामानुजन से मिले तो उन्होंने कहा कि मैं जिस टैक्सी से आया उसका नंबर 1729 था जो अपशकुन संख्या है। रामानुजन ने तुरंत कहा कि नहीं नहीं “यह संख्या छोटी से छोटी संख्या है, जिसे दो भिन्न भिन्न रूपों में दो संख्याओं के घन के योग के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। वह इस प्रकार कि $-1729 = 10^3 + 9^3 = 12^3 + 1^3$ ।

विख्यात गणितज्ञ प्रो. लिटिलवुड का ठीक ही कहना था कि रामानुजन प्रत्येक संख्या के मित्र थे।”

स्वदेश लौटने के बाद असाध्य बिमारी की अवस्था में भी उनकी गणित की साधना चलती रही। उनकी पत्नी जानकी देवी के शब्दों में कहें तो “वे पूरे समय पथारी में रहने के कारण उनकी पीठ एवं पैर में दर्द होता था। परंतु उसका परवाह किये बिना रामानुजन कहते थे कि मुझे तकीया लगाकर बैठा दो और बाद में स्लेट और कलम



मांगकर गणित के अनुसंधान कार्य में मग्न हो जाते थे। मृत्यु के दो मास पूर्व 12 जनवरी 1920 को प्रो. हार्डी को अंतिम पत्र में लिखा उसमें भी उन्होंने “मॉक थोटा फंक्शन” पर मिले परिणामों को भेजा था।

रामानुजन का जन्म 22 दिसंबर 1887 के दिन उनके मामा के घर तमिलनाडु के इरोड में हुआ था। उनके पिताजी श्रीनिवास आयंकर तंजाऊर जिले के कुंभकोणम गांव में कपड़े की दुकान में मुनीम का कार्य करते थे। परिवार की आर्थिक स्थिति अत्यंत सामान्य थी। उनकी माता कोमलताम्मल धार्मिक प्रवृत्ति की एक परम्परावादी महिला थीं। परिवार से मिले धार्मिक संस्कारों के कारण रामानुजन भी रोज सुबह पूजा – पाठ करते थे, हमेशा धोती पहनना, चोटी रखना आदि

बातें उनके जीवन में दिखती थीं। जब रामानुजन को प्रो. हार्डी के माध्यम से इंग्लैंड जाने का निमंत्रण मिला तब उनकी माता ने स्पष्ट ना में उत्तर दिया। क्योंकि उस समय गलत मान्यताओं के कारण समंदर पार जाना अशुभ माना जाता था और विदेश के लोग मांस, मदिरा का सेवन करते हैं तो मेरे बच्चे पर भी कुसंस्कार का प्रभाव पड़ेगा। उनकी कुलदेवी नामगिरी में अत्यंत श्रद्धा थी।

एक दिन सुबह उनकी माता ने कहा कि कल रात्रि में उनको कुलदेवी स्वप्न में आयी और उसमें रामानुजन को सम्मान अंग्रेजों में बैठे देखा। बाद में कुलदेवी ने उनको आज्ञा दी वह पुत्र की इच्छा के विरुद्ध कुछ भी न करे तब उनकी माता को वचन दिया कि वह भारतीय परंपरा एवं धर्म का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और हमेशा शाकाहारी भोजन ही लेंगे। इसके बाद 17 मार्च 1914 को इंग्लैंड के लिए उन्होंने प्रस्थान किया।

रामानुजन पढ़ाई में काफी आगे थे। इस हेतु विद्यालयीन शिक्षा के समय उनको कई पुरस्कार एवं छात्रवृत्तियां प्राप्त हुई थीं। परंतु गणित में विशेष रुचि के कारण उस ओर अधिक ध्यान देने के परिणामस्वरूप

11 वीं की परीक्षा में वे गणित छोड़कर सभी विषयों में अनुत्तीर्ण हुए थे, परंतु उनकी गणित की उत्तरवही देखकर उनके शिक्षक भी आश्चर्यचकित थे। उन्होंने 16 वर्ष की आयु में विख्यात गणितज्ञ जी. एस. कार की पुस्तक में से ज्यामित एवं बीजगणित के प्रमेय एवं सूत्र हल कर लिए थे। 1902 में त्रिघात एवं चतुर्घात समीकरण हल करने के तरीके खोज निकाले थे। वह गणित में इतने विद्वान थे कि उनके विद्यालय में 1200 छात्र थे, इस कारण से वहां के शिक्षकों को समय सारिणी बनाने में कठिनाई आती थी, वह कठिन कार्य रामानुजन ने सहजता से करके अपने वरिष्ठ सुब्बीयार को दिया।

ग्यारहवीं की परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने के बाद परिवार की आवश्यकता के कारण वह ट्यूशन करने लगे, बाद में विवाह हो जाने के बाद उनको कई स्थानों पर नौकरी हेतु भटकना पड़ा। इस कारण से उनका गणित कार्य भी प्रभावित होता था। परंतु उन 6 वर्ष के कठिन समय में उनकी डिप्टी कलेक्टर रामस्वामी अय्यर प्रो. पी. वी. शेषु अय्यर, सी. वी. गोपालचारी, रामचन्द्र राव आदि विद्वानों से भेंट हुई और उन सभी के सहयोग से नौकरी के साथ – साथ गणित का कार्य भी वह करते रहे।

रामानुजन के जीवन में जिसकी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही वह कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के प्रो. हार्डी की थी। उन्होंने जब रामानुजन का गणितीय शोध कार्य देखा तब वह आश्चर्यचकित रह गये। उन्होंने ब्रिटेन के अन्य गणितज्ञों, भारत के अंग्रेज अधिकारियों तथा मद्रास विश्वविद्यालय के अधिकारियों से विचार – विमर्श एवं आग्रह करके रामानुजन को इंग्लैंड बुलाया। उन्होंने इंग्लैंड में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के ट्रिनिटी कॉलेज के फेलो के रूप में रामानुजन को प्रवेश कराने, छात्रवृत्ति दिलाने एवं अध्ययन तथा शोध कार्य में सब प्रकार से सहयोग किया। जिस रामानुजन को अपने देश में ग्यारहवीं कक्षा की उपाधि नहीं मिली थी, वे विश्व के महान गणितज्ञ बनने में अपनी महती भूमिका का निर्वाह किया। रामानुजन 1914 से 1919 के दरम्यान इंग्लैंड में रहे। उस दरम्यान उनके जीवन में काफी उतार – चढ़ाव आये। प्रथम विश्वयुद्ध के कारण गणित के कार्य में रुकावट, खान – पान में कठिनाई (क्योंकि रामानुजन पूर्णतः शाकाहारी थे।) अत्यधिक ठंड के कारण बीमारी आदि समस्याओं के बीच भी उन्होंने 37 शोध पत्र प्रस्तुत किये।

रामानुजन को 19 मार्च 1916 को कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि दी गई। 6 दिसंबर

1917 को 'फेलो ऑफ लंदन मथेमेटीकल सोसायटी' तथा फरवरी 1918 में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के सदस्य के रूप में वह नियुक्त हुए। मई 1918 में 'फेलो ऑफ रायल सोसायटी' बनने का सम्मान प्रथम भारतीय के रूप में प्राप्त हुआ। 13 अक्टूबर 1918 को वह ट्रिनिटी कॉलेज के फेलो चुने गये। इन घटनाओं से रामानुजन ने स्वयं को धन्यता का अनुभव किया। क्योंकि उनके गुरु समान प्रो. हार्डी भी इसी पद पर ट्रिनिटी कॉलेज में कार्यरत थे।

श्रीनिवास रामानुजन ने 32 वर्ष की छोटी आयु में जीवनभर संघर्षरत रहकर गणित के क्षेत्र में सारी ऊंचाईयां प्राप्त की। उनके किये हुए शोध कार्य का पार्टीकल फिजिक्स, कम्प्युटर साइंस, क्रायप्टोग्राफी, पोलिमर केमिस्ट्री, परमाणु भट्टी, दूरसंचार, कम्प्यूनिवेशन नेटवर्क, घात, न्यूक्लियर फिजिक्स, चिकित्सा विज्ञान आदि क्षेत्रों में अनुप्रयोग किये जा रहे हैं। उनके तीन हस्तलिखित नोट बुक डाटा इन्स्ट्रीट्यूट ऑफ फान्डामेंटल रिसर्च के द्वारा प्रकाशित किया गया। उनके द्वारा अंतिम दिनों में जो कार्य किया गया था, वह अप्रैल 1976 में अमेरिका की विस्कोन्सीन यूनिवर्सिटी के विजीटिंग प्रो. जार्ज एन्ड्रयूज को ट्रिनिटी कॉलेज की पुस्तकालय में से अचानक 140 पृष्ठ मिल गये। प्रो. एन्ड्रयूज को ट्रिनिटी कॉलेज की पुस्तकालय में से अचानक 140 पृष्ठ मिल गये। प्रो. एन्ड्रयूज ने यह सारे पेपर को 'The lost not book of Ramanujan' के नाम से प्रकाशित किया। जिस पर आज भी दुनिया के महान गणितज्ञ कार्य कार्य कर रहे हैं। अभी अभी कुछ दिनों पूर्व अमेरिका के गणितशास्त्री ने रामानुजन के अंतिम पत्र में भेजे गये फॉर्मूले को सिद्ध कर लिया है, ऐसा दावा किया गया है। इसी प्रकार 1921 में प्रसिद्ध हंगेरीयन गणितज्ञ ज्योर्ज पोल्या ने प्रो. हार्डी से रामानुजन की नोट बुक कार्य करने हेतु ली थी। कुछ दिनों के बाद वे प्रो. हार्डी से मिलने आये और उन्होंने नोटबुक जल्दी में वापस कर दिया। जब प्रो. हार्डी ने कारण पूछा तो उन्होंने उत्तर दिया कि अगर मैं इसके परिणामों को सिद्ध करने के मायाजाल में फंस गया तो मेरा समग्र जीवन इसी में व्यस्त हो जाएगा और मेरे लिए स्वतंत्र शोध कार्य करना संभव नहीं होगा।

प्रसिद्ध गणितज्ञ एवं दार्शनिक बर्ट्रेड रसेल ने कहा कि प्रो. हार्डी एवं लिटिलवुड ने "एक हिन्दू क्लर्क" में दूसरे न्यूटन को खोज निकाला। ए. पी. जे अब्दुल कलाम ने कहा था कि भारत ही नहीं पूरे विश्व के

गणितज्ञों के लिए रामानुजन निरंतर प्रेरणास्रोत बने हुए हैं। प्रो. हार्डी ने कहा कि उन्होंने मेरे जीवन को समृद्ध बनाया है, मैं उनको कभी नहीं भूलना चाहता। प्रो. हार्डी ने तत्कालीन गणित के विद्वानों को 100 में से अंक दिये थे जिसमें स्वयं को 25, लिटिलवुड को 30, जर्मन गणितज्ञ हिलवर्ड को 80 और रामानुजन को 100 अंक दिये थे।

रामानुजन ने इंग्लैंड के पांच वर्ष के कार्यकाल में अनेक सम्मान प्राप्त किये, परंतु अपने जीवन की सरलता, सादगी और भारतीयता को उन्होंने जीवन में यथावत बनाये रखा था। प्रो. के. आनंदराव तो रामानुजन के समय में ही किंग्स कॉलेज में थे। उनके अनुसार इतनी प्रसिद्धि मिलने के बाद भी वे स्वभाव से विनम्र थे, रहन - सहन में सादगी थी। रामानुजन विदेश में भी अपने लिए स्वयं ही भोजन बनाते थे। 'वे कहते थे, यदि कोई गणितीय समीकरण अथवा सूत्र किसी भागवत विचार से मुझे नहीं भर देता तो वह मेरे लिए निरर्थक है।' जब उनकी आर्थिक स्थिति ठीन नहीं थी, लिखते समय कागज खत्म हो जाते थे तब लिखे हुए कागज पर लाल स्याही की मदद से सूत्र लिखने लगते थे।

नौकरी के समय में पोर्ट ट्रस्ट के रास्ते पड़े हुए कागज इकट्ठे करके उपयोग करते थे। चैन्नई विश्वविद्यालय से जब इनको 250 रुपये की छात्रवृत्ति स्वीकार हुई, तब उन्होंने रजिस्ट्रार को पत्र लिखकर कहा कि इसमें से मेरे घर का खर्च निकलने के बाद जो बच जाय वह गरीब विद्यार्थियों के सहायता कोष में जमा करा दें।

वर्ष 2011 में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री ने श्रीनिवास रामानुजन के 125 वें वर्ष निमित्त राष्ट्रीय गणित वर्ष घोषित किया था। तबसे भारत में 22 दिसंबर को गणित दिवस मनाया जाता है परंतु दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि भारत में श्रीनिवास रामानुजन के कार्य पर विशेष अनुसंधान नहीं किया जा रहा। केन्द्र एवं राज्यों की सरकारों तथा देश के गणित पर कार्य करने वाले विद्वानों एवं विश्वविद्यालयों को इस पर चिंतन करके कुछ ठोस कार्य करने के बारे में विचार करना चाहिए। श्रीनिवास रामानुजन का जीवन एवं कार्य मात्र भारत के ही नहीं विश्व के गणितज्ञों, शिक्षकों एवं छात्रों के लिए प्रेरणादायी है। ■

(लेखक शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के सचिव हैं एवं पूर्व में अभावपि के राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री रह चुके हैं।)

Proposal of six State Universities in Institute of Eminence a welcome step : ABVP

ABVP further demands 50 Cr annual funding for 100 affiliating State Universities



khil Bharatiya Vidyarthi Parishad (ABVP) welcomes the proposal by the Empowered Expert Committee (EEC) of including six public state universities in the Institutes of Eminence category. It correlates with the long-standing demand of ABVP to improve funding of public state universities, which forms the bedrocks for tertiary education in India with 40,000 colleges connected with such universities of affiliating structure. ABVP acknowledges that similar demand for the inclusion of multi-disciplinary public universities as Institutes of Eminence on the basis of eligibility was made to the UGC by an

ABVP delegation earlier this month. ABVP further proposes that UGC should support 100 state universities with next set of funding thereby handholding such public state universities to organically raise their bar to compete with Institute of Eminence. These universities should be granted sustained funding - in the next bracket - for 10 year period to excel in delivering quality education to the core of Indian academic domain. Shri Ashish Chauhan, ABVP National General Secretary welcoming the decision said, "UGC should accept proposal of including State Universities and Central Universities of multidisciplinary nature in Institute of Eminence category." ■

महात्मा गांधी की सार्धशती पर विशेष आलेख शृंखला-4

स्वदेशी भाव की हिंदी भाषा

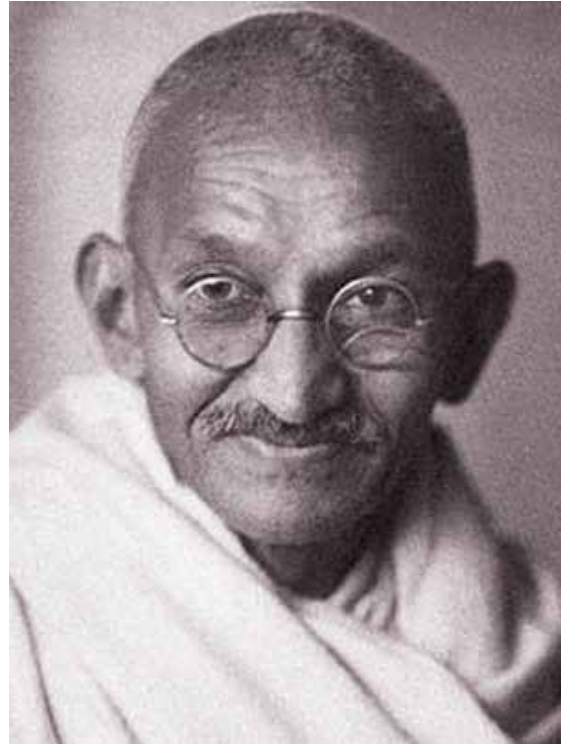
| डा. जयप्रकाश सिंह |

गांधी के बाद बहुत चालाकी से उनकी स्वदेशी की संकल्पना को उत्पादों की खरीद-बिक्री तक सीमित कर दिया गया। गांधी की तो स्पष्ट मान्यता थी कि स्वराज और स्वदेशी के संघर्षों की शुरुआत भाषा के प्रश्न से ही होनी चाहिए। उनके लिए स्वराज का संघर्ष और कुछ नहीं बल्कि स्वदेशी के लिए किया जाने वाला संघर्ष है और उनके स्वदेशी के संघर्ष की शुरुआत स्वदेशी भाषा से होती है। स्वदेशी भाषा का प्रश्न उनके सभी संघर्षों के केन्द्र में है।

उनका आकलन था कि हिन्दी में ऐसा सामर्थ्य दिखाई पड़ता है कि वह स्वदेशी के भाव की संवाहिका बन सकती है। अपने स्वभाव के अनुरूप उन्होंने हिन्दी को सार्वजनिक विमर्श के केन्द्र में लाने से पहले खुद ही सीखना प्रारम्भ किया। उनकी भाषायी प्रतिबद्धता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने अपनी बोलचाल में अंग्रेजी शब्दों के आ जाने को अयोग्यता का प्रतीक माना और उसके लिए सार्वजनिक रूप से क्षमा मांगी।

गांधी संभवतः पहले ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने औपनिवेशिक भाषा में बच्चों की शिक्षा को देश के साथ विश्वासघात बताया। वह अपनी आत्मकथा में लिखते हैं कि जो भारतीय अभिभावक अपने बच्चों को अंग्रेजी में शिक्षा देते हैं वह न केवल बच्चों के साथ विश्वासघात करते हैं बल्कि अपने देश के साथ भी विश्वासघात करते हैं। ऐसे अभिभावक बच्चों को राष्ट्र की आध्यात्मिक और सामाजिक विरासत से काट देते हैं और उन्हें देश सेवा के अयोग्य बना देते हैं। (आत्मकथा, पृष्ठ 321)।

यहां पर यह स्पष्ट कर देना जरूरी है कि गांधी की अंग्रेजी के प्रति आपत्ति उसे माध्यम बनाए जाने को लेकर अधिक थी, एक भाषा के रूप में वह उसे दुनिया के अलग-अलग हिस्सों से जुड़ने का साधन मानने को



तैयार थे। अंग्रेजी को लेकर अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए वह यंग इंडिया के 1 जून 1921 के अंक में लिखते हैं कि - मैं नहीं चाहता कि मेरे घर के दरवाजे और खिड़कियां पूरी तरह बंद हों। मैं चाहता हूं कि दूसरी संस्कृतियों की हवा मेरे घर तक पहुंचे। लेकिन इसके साथ मैं यह भी नहीं चाहता कि बाहरी हवा का प्रवाह मेरे घर को ही उखाड़ फेंके। मैं दूसरे के घर में भिखारी या दास के रूप में भी नहीं रहना चाहता। मैं झूठे अहंकार या तथाकथित सामाजिक लाभ के लिए अपनी बहनों के ऊपर अंग्रेजी सीखने का दबाव डालना उचित नहीं समझता।

गांधी भाषा के प्रश्न को लेकर अपने जीवन के आरंभिक काल से ही सजग थे। इसलिए उनके विचारों का बीज माने जाने वाली पुस्तक हिंद स्वराज में भी भाषा

के प्रश्न पर उनकी स्पष्ट राय देखने को मिलती है। वह अंग्रेजी की शिक्षा को भारतीयों का दासत्व से जोड़ते हैं। हिंद स्वराज में वह लिखते हैं-लाखों लोगों को अंग्रेजी की शिक्षा देना उन्हें दास बनाने जैसा है। मैकाले द्वारा रखी गई शिक्षा की नींव हमें दास बना रही है। मुझे नहीं पता कि उसकी मंशा क्या थी, लेकिन निष्कर्ष से तो ऐसा ही लग रहा है। क्या यह एक पीड़ादायी स्थिति नहीं है कि यदि मैं न्यायालय में जाता हूँ तो मुझे अंग्रेजी को ही अपना माध्यम चुनना पड़ता है, यदि मैं वकील बन जाता हूँ तो मैं अपनी अपनी भाषा नहीं बोल पाता हूँ और किसी अन्य को मेरा अनुवाद करना पड़ता है। क्या यह पूरी तरह बेहूदा नहीं है। क्या यह दासता की निशानी नहीं है।

गांधी जी के भाषा सम्बंधी विचारों में स्पष्टता और सातत्य तो दिखता ही है, एक अन्य कारक जो उन्हें अलहदा बना देता है, वह है साहस। अन्य मसलों को लेकर गांधी संतुलित राय ही रखते थे लेकिन भाषा को लेकर वह हमेशा से ही बहुत मुखर रहे। 1914 में भारत आने के बाद वह 1918 तक सार्वजनिक दृष्टि से बहुत सक्रिय नहीं दिखाई पड़ते लेकिन भाषा को लेकर उनकी राय इस दौर में भी बहुत मुखर होकर अभिव्यक्त होती है। 27 दिसम्बर 1917 को पहली ऑल इंडिया सोशल सर्विस कान्फ्रेंस में दिया गया उनका सम्बोधन इस बात की तस्दीक करता है कि वह भाषा को लेकर कुछ निश्चित निष्कर्षों पर सम्भवतः अफ्रीका में ही पहुंच गए थे और उनके ये निष्कर्ष जीवन पर अपरिवर्तनीय रहे।

पहली सोशल सर्विस कान्फ्रेंस में वह कहते हैं-अंग्रेजी सीखने से सम्बंधित अंधविश्वासों से मुक्त होकर हम समाज की सबसे बड़ी सेवा कर सकते हैं।.....अंग्रेजी के प्रशिक्षण की आवश्यकता में हमारा विश्वास हमें दास बना देता है और हम देश की सेवा करने के अयोग्य हो जाते हैं। क्या ऐसा नहीं है कि हम इस बात को देख पाने में अक्षम हो गए हैं कि शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होने के कारण हमारे बुद्धिजीवी सामान्य आदमी से कट गए हैं, हमारे देश के श्रेष्ठ दिमाग एक दायरे में सिमट गए हैं और आम लोगों तक नए विचार नहीं पहुंच पा रहे हैं। पिछले साठ दशकों में तथ्यों को आत्मसात करने के बजाय हमारी ऊर्जा शब्दों को रटने और उनका उच्चारण सीखने में खर्च हो रही है। अपने पूर्वजों से प्राप्त नींव पर भवन खड़ा करने के बजाय हम जिस तरह विस्मृत कर हैं, वह इतिहास में अन्यत्र

कहीं दिखाई नहीं पड़ता। यह एक राष्ट्रीय आपदा है। हिन्दी को लेकर वह टैगोर से भी टकराते हैं और उन्हें एक कड़ा पत्र लिखते हैं। अब यहां पर प्रश्न यह उठता कि गांधी के बाद गंगा में काफी पानी बह चुका है। क्या अब भी उनके भाषायी विचारों की प्रासंगिकता बनी हुई है। 1991 के बाद वैश्वीकरण के आंधी में अंग्रेजी की अनिवार्यता का भ्रम तो और भी अधिक मजबूत हुआ है। भाषायी स्तर पर एक दौर में जो स्वदेशी का आग्रह हुआ करता था, वह भी अब क्षीण हुआ है। निश्चय ही स्थिति अधिक जटिल हुई है और यह जटिलता ही गांधी के भाषायी विचारों की प्रासंगिकता को बढ़ा देती है।

आज के परिदृश्य में सांस्कृतिक स्वलन और आर्थिक शोषण का सबसे बड़ा जरिया अंग्रेजी ही है। आधुनिकता के दबाव, वैज्ञानिकता के व्यामोह या साहस की कमी के कारण यदि हम इस स्थिति को हम गांधी की तरह राष्ट्रीय आपदा नहीं कह पा रहे हैं, राष्ट्र के साथ विश्वासघात नहीं ठहरा पा रहे हैं तो इसका आशय यह क्यों न निकाला जाए कि भारतीयों के जड़ोन्मूलन के इस अभियान में हम भी हत्बुद्धि होकर अपनी मौन सहमति दे बैठे हैं।

(लेखक हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय में जनसंचार विषय के सहायक आचार्य हैं।)

प्रिय मित्रो!

शिक्षा - क्षेत्र की प्रतिनिधि - पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' का दिसम्बर 2018 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। यह अंक महत्वपूर्ण लेख एवं विभिन्न समसामयिक घटनाक्रमों व खबरों को समाहित किए हुए हैं। आशा है, यह अंक आपके आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा। कृपया 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव व विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई - मेल पर अवश्य भेजें : -

‘राष्ट्रीय छात्रशक्ति’

26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,

नयी दिल्ली - 110002.

फोन : 011-23216298

✉ chhatrashakti.abvp@gmail.com

📘 www.facebook.com/rashtriyachhatrashakti

🐦 www.twitter.com/chhatrashakti1

देशभर में याद किये गये बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर

बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर की पुण्यतिथि (महापरिनिर्वाण दिवस) 6 दिसंबर को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्, समरसता दिवस के रूप में मनाती है। महापरिनिर्वाण दिवस के मौके पर विद्यार्थी परिषद् के द्वारा देश भर में कार्यक्रम, संगोष्ठी, वाद - विवाद प्रतियोगिता, श्रमिक सम्मान समारोह, छात्रावास संपर्क अभियान आयोजित कर बाबा साहेब के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला गया। अभाविप हिमाचल प्रदेश द्वारा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला में आयोजित एक संगोष्ठी को संबोधित करते हुए अभाविप के क्षेत्रीय संगठन मंत्री विक्रान्त खंडेलवाल ने कहा कि बाबा साहेब ने एक महान संविधान का निर्माण किया और नारी शिक्षा को आगे ले जाने लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाये। आंबेडकर जी अपने देश के समाज के हितों का चिंतन करते हुए कहा करते थे कि मैं कैसे समाज और देश का भला कर सकता हूँ ? देश की कमियों को कैसे उजागर कर सकता हूँ ? जब मेरा भारत स्वतंत्र होगा, तो स्वतंत्र भारत की व्यवस्था के अंदर किन बातों को प्राथमिकता देनी चाहिए। किन - किन बातों की सुरक्षा करनी चाहिए, इसलिए हर विषय की प्राथमिकता को जोड़ते हुए उन्होंने इस विषय का अध्ययन किया। श्री खंडेलवाल ने कहा कि डा. आंबेडकर ने न केवल जाति - प्रथा, छुआ - छुत जैसे कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष कर इसे दूर करने का प्रयास किया बल्कि भारत को एक प्रगतिशील संविधान दिया, जिसके अनुसार हमारा देश चल रहा है। उन्होंने कहा कि समरस समाज के बिना सशक्त राष्ट्र की कल्पना बेमानी है। आज देश के कुछ भागों में समरसता को तोड़ने का कुत्सित प्रयास किये जा रहे हैं ऐसी मानसिकता के विरुद्ध आम जनमानस को जागरूक होने की जरूरत है। संगोष्ठी में अभाविप के प्रांत संगठन मंत्री कौल नेगी, पूर्व प्रांत अध्यक्ष डा. प्रदीप कुमार, प्रांत उपाध्यक्ष आश्वनी लखनपाल समेत अनेकों कार्यकर्ता मौजूद थे।

वहीं अभाविप कोंकण प्रांत के द्वारा प्रदेश के



अनुसूचित जाति/जनजाति छात्रावास में संवाद अभियान चलाया गया। इस अभियान का नाम 'मैं समाज का और समाज मेरा' दिया गया था, इसके तहत परिषद् के कार्यकर्ता कोंकण के अनेक छात्रावासों में जाकर उनकी परेशानियों से अवगत हुए और उनके साथ सीधा संवाद स्थापित कर राष्ट्र के विकास में सहभागी होने के लिए प्रेरित किया। सप्ताह भर चले इस अभियान में कुल 10 जिला, 16 तहसील के 40 अनुसूचित जाति/जनजाति छात्रावास में संवाद अभियान किया गया, जिसमें 44 अभाविप कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। इस अभियान में शामिल कार्यकर्ताओं के मुताबिक संवाद अभियान के दौरान सामाजिक एवं स्थानीय स्थिति से प्रत्यक्ष रूप से परिचित होने का मौका मिला।

अभाविप दिल्ली प्रांत के द्वारा दिल्ली के बेगमपुर बस्ती में बाबा साहेब का परिनिर्वाण दिवस मनाया गया। अभाविप के द्वारा बस्ती में रहने वाले सभी लोगों से आत्मीय संवाद बढ़ाने एवं समरस समाज बनाने का अनूठा प्रयोग किया गया। प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. रेखपाल की मानें तो समाज में छूआछूत और जातिगत भेदभाव को दूर कर बाबा साहेब के सपनों का भारत बनाना अभाविप का उद्देश्य है। यही कारण है कि विद्यार्थी परिषद् के द्वारा पूरे देश में समरस समाज बनाने के मनोभाव को लेकर विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। ■

छात्रसंघ चुनावों में अभाविप ने लहराया जीत का परचम

3

उत्तर हो या दक्षिण, पूर्व हो या पश्चिम... भारत के सभी कोनों में स्थित विश्वविद्यालयों का परिसर भगवा नजर आ रहा है। कर्नाटक के मैंगलोर से शुरू हुआ अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का विजय अभियान 2018 के अंत तक जारी है। कर्नाटक के मैंगलोर विश्वविद्यालय से शुरू होकर अभाविप का विजय ध्वज केरल (कन्नूर) के महाविद्यालयीन/विश्वविद्यालयीन चुनाव से होते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ (डूसू) चुनाव पहुंचा। डूसू के कुल चार में से तीन पदों पर अभाविप की जीत हुई। इसी तरह राजस्थान के चित्तौड़, जयपुर, कोटा के अधिकांश महाविद्यालयों में परिषद् के कार्यकर्ताओं की जीत हुई। अरसे बाद हरियाणा में आयोजित छात्र संघ चुनाव में तो विद्यार्थी परिषद् ने सारे रिकार्डों को ध्वस्त कर एकतरफा जीत हासिल किया। इसी प्रकार उत्तराखंड में भी जहां - जहां पर छात्रसंघ चुनाव हुए लगभग सभी जगहों पर विद्यार्थी परिषद् की जीत हुई। वहीं जिस हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय (एचसीयू) में रोहित बेमुला के बहाने विद्यार्थी परिषद् को बदनाम करने की साजिश रची गई थी उस एचसीयू के छात्रों ने सभी पदों पर अभाविप के कार्यकर्ताओं को जीताकर आलोचकों के मुंह पर करारा तमाचा मारा है। हिमाचल में विश्वविद्यालय प्रतिनिधि के रूप में परिषद् के कार्यकर्ता चुने गये हैं। हाल में ही गुजरात विश्वविद्यालय के सिनेट/सिंडिकेट प्रतिनिधि चुनाव में लगभग अस्सी फीसद सीटों पर परिषद् के कार्यकर्ता निर्वाचित हुए हैं। जम्मू - कश्मीर में भी कुछ महाविद्यालयों में छात्र संघ चुनाव हुए थे, वहां पर भी विद्यार्थी परिषद् ने बाजी मारी। पूर्वोत्तर की अगर बात करें तो वहां पर जहां चुनाव हुए विद्यार्थी परिषद् समर्थित उम्मीदवारों की जीत हुई। काशी प्रांत के छात्रसंघ चुनाव में विद्यार्थी परिषद् की उपस्थिति जानदार रही। हाल में संपन्न बिहार - झारखंड के तीन विश्वविद्यालयों में से दो विश्वविद्यालयों के सभी पदों पदों पर तो एक विश्वविद्यालय के कुल पांच पदों में से तीन पदों पर अभाविप ने विजय पताका फहराया है।

रांची विश्वविद्यालय में अभाविप की ऐतिहासिक जीत

रांची विश्वविद्यालय (झारखंड) छात्र संघ चुनाव में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् (अभाविप) ने मिशाल कायम कर दी। पहली बार अध्यक्ष समेत सभी पांच पदों पर कब्जा जमा लिया। रांची विश्वविद्यालय के इतिहास में यह पहली बार हुआ है। इससे पहले छात्र संघ चुनाव में किसी संगठन की इतनी जबरदस्त जीत नहीं हुई थी। मोरहाबादी स्थित रांची कॉलेज की बेसिक साइंस बिल्डिंग में 13 दिसंबर को हुए चुनाव में आदिवासी छात्र संघ (एसीएस) और आजसू के गठबंधन के विरोध के बीच 80 छात्र प्रतिनिधियों में से 46 ने वोट डाले। कुल 57.5 फीसदी मतदान हुआ। इसमें अभाविप के पक्ष में 99 फीसदी वोट पड़े। स्नातकोत्तर इतिहास विभाग (पीजी हिस्ट्री डिपार्टमेंट) की नेहा मार्टी 44 वोट लेकर अध्यक्ष चुनी गई। इसके साथ ही पहली बार रांची विवि को महिला अध्यक्ष मिली। इसके अलावा कुणाल शर्मा उपाध्यक्ष (44 वोट) सौरभ बोस सचिव (45 वोट), सौरभ तिवारी संयुक्त सचिव (45 वोट) और अंकत रंजन उप सचिव (44 वोट) चुने गये। पीपीके कॉलेज बुंडू, बीएस कॉलेज लोहरदगा और रामलखन सिंह यादव कॉलेज छात्र संघ के एक भी प्रतिनिधि ने वोट नहीं डाले। बीएनजे कॉलेज सिसई, सिमडेगा कॉलेज और बिरसा कॉलेज खूंटी के मात्र एक-एक छात्र प्रतिनिधियों ने मतदान किया। नोटा को भी तीन वोट मिले। एसीएम-आजसू गठबंधन के पांच में से चार प्रतिनिधियों को एक भी वोट नहीं मिला। वहीं एसीएस महली गुट के अध्यक्ष पद के प्रत्याशी कुलपति यादव को दो वोट और उपाध्यक्ष के लिए पंचम मुंडा को एक वोट मिले। कुलपति डॉ. रमेश पांडेय ने निर्वाचन प्रमाणपत्र दिये। सभी विजयी प्रत्याशियों को निर्वाची पदाधिकारी डॉ. एसएलएन दास ने शपथ दिलायी।

पटना विश्वविद्यालय के पांच में से तीन पदों पर अभाविप की जीत

बिहार के प्रतिष्ठित पटना विश्वविद्यालय का परिसर इस

बार छात्रसंघ चुनाव में बदला - बदला सा नजर आ रहा था। विद्यार्थी परिषद् को हराने के लिए जमकर सरकारी तंत्र का दुरुपयोग किया गया या यूँ कहें लिंगदोह कमेटी की सरेआम धज्जियाँ उड़ाई गई। इसके बावजूद विद्यार्थी परिषद् ने पांच पदों में से तीन पदों पर जीत हासिल की, जिसमें विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पैनल में उपाध्यक्ष पद पर अंजना सिंह, महासचिव पद पर मणिकांत मणि, संयुक्त सचिव पद पर राजा रवि ने जीत हासिल की जबकि अन्य दो पद जद(यू) के खाते में गया है। यह जीत विद्यार्थी परिषद् के लिए कई मायनों में महत्वपूर्ण है क्योंकि एक तरफ सत्ताधारी जद(यू) के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सह चुनाव रणनीतिकार कहे जाने वाले प्रशांत किशोर सहित तमाम सरकारी तंत्र थे तो वहीं दूसरी तरफ विद्यार्थी परिषद् के समान्य कार्यकर्ता। विद्यार्थी परिषद् का कहना है हम तो पांचों पदों पर जीत रहे थे षडयंत्र के तहत दो पदों पर हराया गया है। अगर ऐसा नहीं है तो पिछले चुनाव में मतदान करने वाले छात्र - छात्राओं की संख्या को सार्वजनिक किया गया इस बार क्यों नहीं किया गया। इस बार क्यों मत प्रतिशत जारी किया गया? विश्वविद्यालय प्रशासन के द्वारा जारी प्रतिशत के आधार पर मतपत्रों की संख्या 500 से 1000 तक कम है, विश्वविद्यालय प्रशासन को स्पष्ट करना चाहिए कि किन परिस्थितियों में उपयोग किये गये मतपत्रों की संख्या घटाई गई। प्रधानाचार्य और प्राध्यापकों को एक तरफ सत्ता प्रलोभन तो दूसरी ओर धमकी इन कठिन परिस्थितियों तथा सत्ता के दुरुपयोग के बावजूद पटना विश्वविद्यालय के छात्र समुदाय ने अभावपि के पक्ष में बड़े पैमाने पर समर्थन देकर यह सिद्ध कर दिया कि दुनिया की कोई भी ताकत छात्र समुदाय को प्रभावित नहीं कर सकती है। जीत के बाद अभावपि ने प्रिस विज्ञप्ति जारी कर पटना विश्वविद्यालय के तमाम छात्र समुदाय को छात्रसंघ चुनाव में दिये समर्थन के प्रति आभार व्यक्त की है।

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के सभी पदों पर अभावपि का कब्जा

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा में छात्र संघ पर एक बार फिर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का दबदबा बरकरार रहा। कार्यालय पदाधिकारी के पांचों पदों पर अभावपि समर्थित उम्मीदवारों ने शानदार जीत हासिल की है। अध्यक्ष पद पर एमआरएम कॉलेज की मधुमाला कुमारी ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी लेफ्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट

के संदीप कुमार चौधरी को 18 मतों से पराजित कर जीत हासिल की। मधुमाला को 66 वोट मिले जबकि संदीप 48 वोटों पर ही सिमट गए। वहीं उपाध्यक्ष पद पर एसबीएसएस कॉलेज बेगूसराय के राजा कुमार ने 71 वोट हासिल कर छात्र जदयू समर्थित पुरुषोत्तम कुमार चौधरी को 20 मतों से पराजित कर दिया है। महासचिव पद पर सीएम साइंस कॉलेज के उत्सव कुमार पराशर ने 68 वोट लाकर अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी छात्र जदयू समर्थित अन्नू कुमारी को 15 मतों से पराजित कर दिया है। संयुक्त सचिव पद पर अभावपि के सीएमजे कॉलेज खुटौना के ऋषभ कुमार चौधरी ने चुनाव में सर्वाधिक 82 मत हासिल कर अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी एलडीएफ के अखलाक अहमद को 34 मतों से पराजित किया। वहीं कोषाध्यक्ष पद पर समस्तीपुर कॉलेज के मनीष कुमार ने 65 वोट हासिल कर अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी छात्र जदयू के साईं कुमार निरूपम को 8 मतों से पराजित किया। परिणाम की घोषणा होते ही अभावपि के प्रत्याशियों के चेहरे खुशी से दमक उठे जबकि पराजित प्रत्याशी निराशा के साथ मतगणना परिसर से बाहर निकले। परिणाम की घोषणा होने के बाद मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी डॉ. चंद्रभानु प्रसाद सह, निर्वाची पदाधिकारी डॉ. अजीत कुमार सह, डीएसडब्ल्यू डॉ. भोला चौरसिया, मतगणना पदाधिकारी प्रो. रतन कुमार चौधरी आदि ने निर्वाचित प्रतिनिधियों को जीत का प्रमाण पत्र प्रदान किया।

काशी के अधिकांश महाविद्यालयों/ विश्वविद्यालयों में अभावपि की जीत

काशी प्रांत में भी अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का जादू बरकरार रहा। प्रांत के अधिकांश महाविद्यालयों में अभावपि समर्थित उम्मीदवारों की जीत हुई। बता दें कि काशी प्रांत के छह जिलों में छात्र संघ चुनाव करवाये गये थे। कुल 45 में से 31 पदों पर अभावपि के प्रत्याशियों की जीत हुई, काशी के प्रांत संगठन मंत्री विजय प्रताप बताते हैं कि यह पहला मौका है जब इतने पदों पर विद्यार्थी परिषद् ने जीत का परचम लहराया है। बता दें कि संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में लंबे समय से एनएसयूआई का कब्जा था लेकिन इस बार उसका भी सूपड़ा साफ हो गया, वहीं हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय जिसे कथित रूप से समाजवादियों का गढ़ कहा जाता था वहां से भी इस बार छात्रों ने उन्हें विदा कर दिया है और विद्यार्थी परिषद् के उम्मीदवारों के उम्मीदवारों को अपना समर्थन दिया है। ■

शब्दरंग: साहित्य और कला का अद्भुत संगम



जन से जुड़ा जीवन और जीवन से जुड़ा है कला एवं साहित्य....और इन दोनों का अद्भुत संगम दिखा शब्दरंग में, जहां पर साहित्य, कला और सिनेमा एक साथ डुबकी लगा रहे थे। कला एवं साहित्य नश्वर में शास्वत का प्रतीक है। जीवन की सारी सुंदरता, उसका स्वर्गिक अर्थ अपने पूरे शिल्प में कलाओं में ही आकार लेती है। कला ही धर्म संस्कृति एवं राष्ट्र को एक रूप में निरूपित करती है। मिट्टी कला की आदि माता है। सभी कलाओं में व्याप्त यह वैभवमयी क्रीड़ाभूमि विविध कला के इंद्रधनुषी रंगों का प्रतीक है। कलाओं के पारस्परिक संश्लेष से ही एक बेहतर भारत का स्वप्न निकलता है! कला, साहित्य, सिनेमा आदि के बहुवर्णी रंग का साक्षात्कार एवं अमरता के अखंड आनंद और पुण्य के प्रवाह हेतु ही अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के प्रकल्प थिंक इंडिया, राष्ट्रीय कला मंच एवं उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में शब्दरंग साहित्य महोत्सव का आयोजन किया गया। तीन दिवसीय इस

साहित्य महोत्सव में कुल आठ सत्रों का आयोजन किया गया जिसमें मीडिया, कला, सिनेमा एवं साहित्य की प्रमुख शख्सियतों ने प्रतिभाग किया।

उत्कृष्ट साहित्य समाज को सशक्त बनाता है : राम नाईक

शब्दरंग के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए उत्तर प्रदेश के राज्यपाल राम नाईक ने कहा कि उत्कृष्ट साहित्य समाज को सशक्त बनाता है। कुशल लेखक समाज को दिशा देता है। नई दिशा में चलने वाला समाज देश को उन्नति के शिखर पर ले जाता है। संवाद को बनाये रखने में साहित्य व समाज की महती भूमिका रहती है। जैसा संबंध, आत्मा और शरीर का है, वैसा ही संबंध साहित्य और समाज का होता है। उन्होंने सफलता के चार मन्त्रों के रूप में निरंतर बनी रहने वाली मुस्कान, आभार प्रकट करना, अवमानना से दूरी और जीवन में बेहतर करते रहने का लक्ष्य निर्धारित करने की महत्ता को रेखांकित किया। राज्यपाल ने कहा कि

सिर्फ निरंतर चलने वालों के भाग्य चलते हैं अतः “चरैवेति-चरैवेति” के विचार को उन्होंने अपनी पुस्तक का मानबिंदु बनाया! श्रीराम नाईक ने स्वयं को एक आकस्मिक लेखक बताया।

शब्द ही बने हैं मरहम, शब्द ही बने घाव: श्रीहरि बोरिकर

अभाविक के राज्य विश्वविद्यालय कार्य प्रमुख श्रीहरि बोरिकर ने साहित्य, कला और संवाद की महत्ता को रेखांकित करते हुए कहा कि शब्दों की महिमा बड़ी निराली है। शब्द संभाल कर बोलिए, शब्द के हाथ न पांव! शब्द ही बने हैं मरहम, शब्द ही बने घाव! इसलिए युवाओं को साहित्य एवं कला से आत्मीय संबंध बनाना चाहिए ताकि अच्छे शब्दों का प्रयोग सीख सकें। उन्होंने समाज के ज्वलंत मुद्दों पर प्रकाश डालते हुए शब्दरंग जैसे भारतीयता से अभिसिंचित कार्यक्रमों की आवश्यकता पर बल दिया।

वहीं बॉलीवुड की सुप्रसिद्ध पटकथा लेखिका अद्वैता कला ने पटकथा लेखन की बात करते हुए कहा की लेखन की कोई एक निर्धारित विधि नहीं है परन्तु लेखन जिस भी प्रकार का हो दायित्वबोध से हीन नहीं होना चाहिए। भारत की समृद्ध वाचिक परम्परा का स्मरण करते हुए उन्होंने कहा की हमें अपनी अमूल्य सांस्कृतिक निधियों पर गर्व करना चाहिए। अतुल श्रीवास्तव ने अभिनय कला के भावनात्मक पक्ष पर जोर दिया और उसे सिनेमा निर्माण का प्रेरक बिंदु बताया। प्रो. गोविन्द ने सिनेमा की ऐतिहासिक पड़ताल करते हुए इसे सामाजिक परिवर्तन का यन्त्र बताया गया।

साहित्य महोत्सव के प्रथम दिन सांस्कृतिक संध्या का भी आयोजन किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में राष्ट्रीय कथक संस्थान के दल के द्वारा “शिवोहम” के भाव को दर्शाते हुए कथक नृत्य की प्रस्तुति की गई।

संस्कृति, संस्कार से आती है : राजनाथ सिंह सूर्य

द्वितीय दिन के पहले सत्र में “मीडिया और संस्कृति” विषय पर परिचर्चा का आयोजन हुआ था, जिसमें राजनाथ सिंह ‘सूर्य’, राहुल रोशन (सम्पादक ओप. इंडिया), अभिजीत मजूमदार (सम्पादक माय नेशन), अरुण भगत (संकाय अध्यक्ष, पत्रकारिता विभाग, माखन लाल चतुर्वेदी पत्रकारिता वि.वि.), आशुतोष शुक्ल, (सम्पादक, दैनिक जागरण) इत्यादि वक्ता के रूप में उपस्थित थे। वरिष्ठ स्तम्भकार राजनाथ सिंह “सूर्य” ने कहा कि संस्कृति, संस्कारों से आती

है जिसे बचाकर रखने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि एक अलग तरह का ज़हर नई पीढ़ी में घोला जा रहा है जिसमें सभी अपने में ही सिमटते जा रहे हैं जिससे सचेत होने की आवश्यकता है। वहीं आशुतोष शुक्ल जी ने कहा कि संस्कृति का भाग है मीडिया तथा पत्रकारिता समाज को ढोल की तरह आवाज देकर जगाने का कार्य करती है। अरुण भगत जी ने कहा कि पत्रकारिता वामपंथ के प्रभाव में लम्बे समय तक प्रताड़ित होती रही और संस्कृति से जुड़ने पर ही प्रतिष्ठित होगी। उन्होंने इंगित किया कि आजकल पत्रकारिता में भी नकारात्मकता का प्रभाव बढ़ा है। प्रो. भगत ने यह भी कहा कि पूर्वकाल से लेकर देश की अबतक की उपलब्धियों में इसका पूरा योगदान है और आज इसके बिना हम जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। माय नेशन के सम्पादक अभिजीत मजूमदार ने कहा कि शिक्षा मीडिया और संस्कृति में सेतु का काम करती है और इसके अभाव में दोनों ही पक्ष प्रभावित होते हैं। मीडिया के उन्होंने तथ्यपरकता के गुणों को पल्लवित करने पर बल दिया।

कार्यक्रम का अगला सत्र “साहित्यकारों की दृष्टि में भविष्य का भारत” था जिसमें कवि गौरव चौहान, प्रो. जीतेन्द्र श्रीवास्तव (रजिस्ट्रार इग्नू), कवियत्री डॉ. रचना सिंह, डॉ. सच्चिदानंद जोशी आदि उपस्थित रहे। डॉ. रचना सिंह ने कहा सिर्फ साहित्य रचना ही नहीं जीवन हेतु भी स्वप्न देखना आवश्यक है। प्रो. जीतेन्द्र श्रीवास्तव ने कहा कि स्वार्थ सिद्धि से ऊपर उठने पर ही साहित्य रचना संभव है। प्रभाकर सिंह जी ने कहा की परमसत्य की लौकिक अनुभूति ही कबीर के रचनाकर्म की प्रेरणा है और तुलसी और कबीर दोनों ही भारत की आत्मा के वैश्विक दूत के रूप में स्वीकार किये जाने चाहिए। कवि गौरव चौहान अपने स्वरो में शौर्य के उद्गार लेकर प्रेक्षकों व श्रोताओं के समक्ष उपस्थित हुए और देशभक्ति से ओत-प्रोत अपनी रचनाओं से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। सच्चिदानंद जोशी ने कहा कि कोई भी साहित्य जब तक आपकी अंतरात्मा से नहीं निकलता, तब-तक वह चिरायु नहीं हो सकता। भारत को विश्व गुरु होने से कोई नहीं रोक सकता परंतु इस प्रक्रिया में हमारा क्या रचनात्मक योगदान हो सकता है यह हमें तय करना है।

भारतीय विचारों का मूल है करुणा : मनोजकांत

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का उद्धरण देते हुए मनोजकांत जी ने कहा कि मैं उसे साहित्य मानने को तैयार

नहीं जो परदुःखकातरता न उत्पन्न कर दे, यही करुणा भारतीय विचार का मूल है। उन्होंने कहा कि भारत में रहने वाला भारत का ही हो जाता है ऐसी भारत की विशेषता है। प्रो. नंदकिशोर पांडेय ने कहा कि पाश्चात्य संस्कृति में जीवन की सतत संघर्ष की अवधारणा है वहीं भारतीय संस्कृति सच्चिदानंद के विचार को लेकर चलने वाली है। प्रो. हरिशंकर मिश्र ने कहा कि भारतीय साहित्य की विपुलता में कोई संदेह नहीं, भारत विश्व के ज्ञान का श्रोत रहा है। सर्वत्र शांति का संदेश ही भारतीय साहित्य की अमूल्य निधि है। राष्ट्र की आरंभिक अवधारणा एक आर्ष विचार के रूप में ऋग्वेद में उपस्थित है। प्रो. जितेंद्र श्रीवास्तव ने अथर्ववेद का उद्धरण देते हुए कहा कि पृथ्वी सूक्त विविध प्रकार की बोलियों व नाना पूजा पद्धतियों के लोगों के इस पृथ्वी पर परिवार की तरह निवास करें यह भारतीय समाज में समरसता के विचार की स्वाभाविक उपस्थिति को दर्शाता है। उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष प्रा. राजनारायण शुक्ला ने अपने संबोधन में कहा कि भारत एवं भारतीयता की भावना को बढ़ाने में साहित्य का बहुत बड़ा योगदान होता है, इसलिए साहित्य के प्रति हमें विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

साहित्य को किसी खांचे में बांटने की जरूरत नहीं : शर्मा

प्रो. कुमुद शर्मा ने कहा कि छद्म साहित्यकारों ने वर्तमान में सामाजिक जीवन की तरह साहित्य को भी खंड खंड कर दिया है। साहित्य को दलित विमर्श, नारी विमर्श इत्यादि खांचों में बांटने की आवश्यकता नहीं। प्रो. शर्मा ने कहा कि सुभद्रा कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा और कृष्णा सोबती के आगे का साहित्य लेखिकाओं द्वारा नहीं लिखा गया। उन्होंने इस बात पर चिंता जताई कि नई लेखिकाओं द्वारा इन भावों से रिक्त महिला किरदारों को ही सशक्त कहा जा रहा है जबकि कृष्णा सोबती द्वारा भी मातृत्व और पत्नी भाव को खारिज नहीं किया गया। लेखक विमोचन और पुरस्कार के गड़बड़ झाले से बाहर निकल रचनात्मक कार्य करने में असफल सिद्ध हो रहे हैं। प्रो. सुरेंद्र दूबे ने हिंदी के भी बढ़ते बाजार और भूमंडलीकरण पर कहा कि भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी भी ग्लोबल हो रही है। प्रो. श्रद्धा सिंह ने कविता के भावपक्ष पर प्रकाश डालते हुए साहित्य सृजन में भाव की उपस्थिति को साहित्य के दीर्घजीवी होने हेतु आवश्यक बताया।

रचनाकर्म लाभ और पुरस्कार से मुक्त होना चाहिए : आशुतोष

जम्मू - कश्मीर अध्ययन केंद्र के निदेशक और राष्ट्रीय छात्रशक्ति पत्रिका के संपादक आशुतोष भटनागर ने कहा कि नए से पुरातन वसूलने का स्वभाव नवोन्मेषी रचनाकर्म में बाधा बनता है। यह रचनाकर्म लाभ और पुरस्कृत होने की आशा से मुक्त होना चाहिए। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार तुलसीदास जी को समीक्षा लेखकों और पुरस्कारों की आवश्यकता नहीं रही, वैसे ही रचनाकर्म की आवश्यकता है।

सांस्कृतिक विरासत से दूर न हो युवा : दिनेश शर्मा

समापन सत्र में अपने संबोधन में उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री दिनेश शर्मा ने कहा की शब्दरंग साहित्य महोत्सव का आयोजन थिंक इंडिया और भाषा संस्थान का अनूठा और सराहनीय कार्य है जिसे प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि समाज में अत्यंत तीव्रता से परिवर्तन आए हैं और समाज की प्राथमिकताएं बदली हैं जिसमें युवा वर्ग की भूमिका को समझना आवश्यक है इस पृष्ठभूमि में साहित्य, कला, सिनेमा और समाज के सभी ज्वलंत मुद्दों पर सुव्यवस्थित विचारों हेतु मंच प्रदान करने के लिए सभी आयोजकों को साधुवाद दिया जाना चाहिए।

जब अनुभव, अनुभूति में बदल जाता है तो साहित्य बन जाता है : श्रीनिवास

अभाविक के राष्ट्रीय सह - संगठन मंत्री श्रीनिवास ने भारत और भारतीयता पर अपना उद्बोधन का आरम्भ किया और कहा की राष्ट्रप्रेम के भाव का जागरण ही शब्दरंग जैसे आयोजनों का उद्देश्य है और कहा कि बौद्धिक और वैचारिक संघर्षों में उच्छृंखलता नहीं वरन तर्कों व रचनात्मक कार्यों की आवश्यकता है। उन्होंने भारत के सम्मुख कड़ी चुनौतियों की बात की और कहा इन सब चुनौतियों के उपरान्त भी जो ग्रहण करने वाली बात है वो यह कि जिस प्रकार रात कितनी भी घनेरी हो दीपक जलाना मना नहीं है वैसे ही इन सारी चुनौतियों के उपरान्त भी राष्ट्र-आराधन के पुनीत कर्म में रत रहते हुए एक भारत-श्रेष्ठ भारत हेतु कार्य करना ही लक्ष्य होना चाहिए। श्रीनिवास की मानें तो संवेदना जगाना ही सही मायनों में साहित्य का सृजन है। जब अनुभव, अनुभूति में बदलता है तो वह साहित्य बन जाता है। ■

ABVP PASCHIMBANGA RALLIED WITH MORE THAN 15,000 STUDENTS IN KOLKATA IN DEMAND OF NRC, PASSING OF CITIZENSHIP AMENDMENT BILL (2016), JUSTICE FOR RAJESH AND TAPASH AND STOPPING OF ILLEGAL INFILTRATION

On 30th November, 2018, ABVP created a historic moment and gave a clarion call as it rallied with more than 15,000 students from three zones. One started from Sealdah, the other being from Howrah and the last being from Central Avenue. Thousands of members of ABVP from Bengal and from different state of India joined in this "NATIONAL STUDENTS' MAHA RALLY". The four issues being justice for the two innocent Dalit students Rajesh Sarkar and Tapas Barman, who were brutally murdered by the West Bengal Police, the reason being they demanded core subject teacher's i.e Bengali, English, Science, History etc. Instead of URDU and Sanskrit teachers. The other important issue of national importance being updating of NRC (National Register of Citizens of India) in Bengal and passing of CITIZENSHIP AMENDMENT BILL (2016) in this winter session of The Parliament. The last issue being more important to the border states such as Bengal, Assam and Bihar where illegal infiltration has been a critical problem for the domiciled people as they are getting deprived of their own resource. The students gathered in three locations and at 11:00 AM the rally started with the slogans of "BHARAT MATA KI JAI" "VANDE MATARAM" and "Urdu Noi Bangla Chaoi; Rajesh Tapas Hottar Bechar Chai". Such a huge gathering stunned the whole city as it proved once again the organisational milestones that ABVP has been achieving throughout the last few years. This rally has proved all critics wrong that "WE" believe in sheer competence and showcase the underlying principle of organisational methodology that no student organisation in Bharat has ever achieved. The rally ended with a public meeting where our National Organizing Secretary Sunil Ambekar ji, National General Secretary Ashish Chauhan Ji, National Secretary Narendra Sapam Ji and Abhilash Panda Ji, State President Dr. Raman K Trivedi, State secretary Saptarshi Sarkar, Bihar State secretary Sudhir Paswan and the families of "RAJESH SARKAR" and "TAPASH BARMAN" gave protesting speeches against

the wrongdoing of current TMC government. It is of great grief that the policies of the current government has gone haywire and it lives on false narratives burgeoning out of institutional mess which sows the seeds of murdering democratic and constitutional rights. ABVP PASCHIMBANGA strongly condemns this unscrupulous acts and discrepancies that the current TMC government is feeding on. History has been changed on 30th Nov. despite all odds ABVP will seek justice for its nation every time there are anti-national forces acting in our nation, be it in JNU or ROHINGYAS. It's a satirical event that MAMATA BANERJEE is giving "ROHINGYAS SPACE" in West Bengal while appeasing the Muslims and now trying to woo HINDU voter by giving rewards. Mamata Banerjee came to power giving the slogan "No revenge, only change", but unfortunately she has forgotten all those sayings. Respected Sunil Ambekar Ji asked the whole crowd to take a pledge to stop these misdeeds, while Ashish Ji gave the current government a strong statement on the policy of infiltration and killing of students and stressed that it is very unfortunate to demand for Bengali language teachers in Paschimbanga. The infiltration problem is on the rise in Bengal and by the help of local TMC leaders, the infiltrators are being given all governmental facilities including VOTER CARDS and RATION CARDS. While Bengal State Secretary Saptarshi Sarkar took the government on one hand including the Congress and leftists who helped the Bill to not pass in Parliament. Moreover, Mou Sarkar; the sister of LATE RAJESH SARKAR narrated the whole incident of firing and protest in DARIBHIT HIGH SCHOOL and raised her voice for CBI enquiry. It is unfortunate that such an event has to be organised in Bengal which showcases the pseudo-democratic fundamentals that this government is relying upon. However, time has been never so ripe for all nationalists to gather against the anti-national forces who are on a verge to form a coalition despite strong ideological and methodological indifferences. ■

प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार विद्यार्थी निधि एवं अभावपि का संयुक्त उपक्रम

क्र.	वर्ष	विषय	प्राप्तकर्ता	अतिथि
1.	1991	महिला सामाजिक कार्यकर्ता	श्रीमति इंदुमती राव (कर्नाटक)	
2.	1992	ग्राम विकास में तकनीकी का प्रयोग	श्री संतोष गोंधलेकर (महाराष्ट्र)	श्री कल्याण सिंह (मुख्यमंत्री उ.प्र.)
3.	1993	वनवासियों के विकास हेतु कार्य	श्रीमति उबती रियांग (असम)	
4.	1994	पारंपरिक तकनीकी संरक्षण एवं विकास	श्री सुधराम बिरजिया, श्री रामवृक्ष लोहार (बिहार)	प्रा. राजकुमार भाटिया (राष्ट्रीय अध्यक्ष)
5.	1995	औषध वनस्पतियों का संरक्षण एवं संवर्धन	श्री रामदास पालेकर (महाराष्ट्र)	डा. ओमप्रकाश बहल (पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष)
6.	1996	झुगगी झोपड़ी निवासियों का विकास	श्री विश्वनाथ बेन्द्रे (महाराष्ट्र)	डा. सुदर्शन (प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता)
7.	1997	पत्रकारिता के द्वारा सामाजिक जागरण	श्री समीप कुमार दास (असम)	श्री सुरेन्द्र महेता (अंतरराष्ट्रीय शाकाहारी कांग्रेस के अध्यक्ष)
8.	1998	शहरी पर्यावरण का संरक्षण एवं संवर्धन	श्री अनिल मेहता (राजस्थान)	श्री नाना पाटेकर (प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता)
9.	1999	संस्कृत का विकास	श्री पी. नंदकुमार (केरल)	प्रा. दिनेशानंद गोस्वामी (राष्ट्रीय अध्यक्ष)
10.	2000	गो संरक्षण, संवर्धन एवं अनुसंधान	डॉ. रमाकांत भोपले, अकोला (विदर्भ)	श्री हरिभाई जोशी (मध्यप्रदेश गो आयोग के सदस्य)
11.	2001	भारतीय लोक संगीत का संवर्धन एवं लोकप्रियकरण	श्रीमति लक्ष्मीकुमारी (बिहार)	श्री जाहनु बरुआ
12.	2002	गैर पारंपरिक ऊर्जा का व्यावसायिक उपयोग	डॉ. प्रियादर्शनी कर्वे, पुणे (महाराष्ट्र)	श्रीमति पी.टी. उषा (एशिया की प्रमुख धाविका)
13.	2003	कुष्ठरोगियों एवं उनके शिक्षा व चिकित्सा हेतु कार्य	श्री आशीष गौतम (उत्तरांचल)	श्री कैलाशपति मिश्रा (राज्यपाल, गुजरात)
14.	2004	बांस वस्तु निर्माण तथा उसे बाजार उपलब्धता हेतु कार्य	श्रीमति निरूपमा देशपांडे, श्री सुनिल देशपांडे (विदर्भ)	डा. महेश शर्मा (अध्यक्ष खादी आयोग)
15.	2005	संघीय कृषि प्रवर्तन एवं ग्रामविकास हेतु कार्य	श्री ए.एस. आनंद, श्री व्ही.के.अरूणकुमार (कर्नाटक)	श्री सोमपाल शास्त्री (भूतपूर्व राज्यमंत्री)
16.	2006	बाजार लैंगिक शोषित महिलाओं तथा उनके बच्चों का प्रबोधन पुनर्वसन एवं सामाजिक पुनर्गठन	डॉ गिरीष कुलकर्णी अहमदनगर (महाराष्ट्र)	डा. दयानंद डोणगावकर (महासचिव भारतीय विश्वविद्यालय संघ)
17.	2007	सुरक्षा से संबंधित पथ दर्शक प्रणाली के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के सफल प्रयास कर्ता	जी.सतीश रेड्डी, हैदराबाद (आंध्रप्रदेश)	डा. के.आई.वासु (राष्ट्रीय अध्यक्ष, विज्ञान भारती)
18.	2008	महिला एवं बच्चों के लिये गरीबी निर्मूलन, (संपूर्ण) देखभाल तथा सुरक्षा प्रदान करने हेतु	श्रीमति ओईनम इंदिरा देवी (असम)	पद्मश्री डा. भंवरलाल जैन (फाउन्डर, जैन इरिगेशन)
19.	2009	रोजगार निर्माण व ग्रामीण विकास	श्रीमति नंदिता पाठक (मध्यप्रदेश)	प्रा. बाल आपटे (राज्यसभा सदस्य)
20.	2010	समाज के गरीब एवं पिछड़े वर्ग के प्रतिभावान छात्रों के लिए सुपर 30 जैसे महत्वकांक्षी तथा नावीन्यपूर्ण शैक्षिक कार्यक्रमों के सफल संचालक	श्री आनंद कुमार (बिहार)	डा. रसुल पौकट्टी (सुप्रसिद्ध संगीतकार एवं ऑस्कर पुरस्कार विजेता)
21.	2011	अनाथ एवं निराश्रित बच्चों का अनूठे रूप से मातृत्व अंगीकार करते हुए उनके पुनर्वास हेतु	श्री मनन चतुर्वेदी (राजस्थान)	जस्टिस आर. सी. लाहोटी (पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सर्वोच्च न्यायालय)

22.	2012	ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में जनसहभाग से संपोषित ग्राम विकास	डा. प्रसाद देवधर सिंधुदुर्ग (महाराष्ट्र)	मा. भैय्याजी जोशी (सरकार्यवाह, रा. स्व. संघ)
23.	2013	असहाय, बीमार, बेघर, मानसिक रूप से कमजोर और निराश्रितों की देखभाल, उनको स्वस्थ भोजन और मानव गरिमा बहाल करने के लिए पुनर्वास के उल्लेखनीय काम को मान्यता प्रदान करने हेतु	श्री एन. कृष्णन (तमिलनाडु)	प्रा. कपिल कपूर (पूर्व उपकुलपति, जे.एन. यू. - दिल्ली)
24.	2014	कृत्रिम पैर के साथ दुनिया की सबसे ऊंची चोटी को जीतने की ऐतिहासिक उपलब्धि, सभी बाधाओं के खिलाफ लड़ने की दृढ़ इच्छाशक्ति तथा समर्पित भाव से सामाजिक कार्य के सम्मान में	सुश्री अरुणिमा सिन्हा (आम्बेडकर नगर, ऊ.प्र.)	सुश्री स्मृति ईरानी (केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री)
25.	2015	प्लास्टिक, ठोस अनुपयोगी सामग्री का प्रबंधन एवं कूड़ा बिनने वालों के उत्थान परियोजना की परिकल्पना की दिशा में उल्लेखनीय योगदान	श्री इम्तियाज अली (भोपाल, मध्य प्रदेश)	श्री धर्मेन्द्र प्रधान (केन्द्रीय पेट्रोलियम मंत्री)
26.	2016	नशा एवं एड्स से मुक्ति की लड़ाई तथा आध्यात्म एवं नियमित व्यायाम द्वारा स्वस्थ व चरित्रवान युवाओं का निर्माण के अग्रणी कार्य के सम्मान में	श्री आर.के. विश्वजीत सिंह (ईम्फाल, मणिपुर)	श्री मनोहर पर्रिकर (रक्षामंत्री, भारत सरकार) श्रीमति सोनल मानसिंह (पद्मविभूषण एवं ओडीसी नृत्यांगना)
27	2017	बच्चों की देखभाल सुरक्षा एवं विकास	श्री आर. गोपीनाथ (बैंगलुरु)	श्री जगत प्रकाश नड्डा (स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री भारत सरकार), श्री सुरेश रैना (प्रख्यात क्रिकेटर भारत)

ABVP welcomes Delhi HC verdict awarding life sentence to Sajjan Kumar

Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad welcomes the decision of Delhi High Court awarding life sentence to Sajjan Kumar in 1984 anti-Sikh riots. The Delhi HC has also observed that it was politically motivated investigation that no case was pursued against accused earlier. In the aftermath of assassination of the then PM Indira Gandhi, Congressmen took to streets and massacred people in broad daylight, writing one of the darkest chapters in the history of independent India. Sajjan Kumar is a famous Congress leader and a former Member of Parliament. Conviction of top most congress leaders in this case of genocide speaks volumes about the political culture of Indian National Congress which incited the deadly riots that claimed lives of more than 3000 people. Sajjan Kumar was involved in killing 5 people in

Raj Nagar and torching of a Gurudwara. He was leading the communal mob. The case of Sikh riots didn't make any progress earlier and was shut down by Delhi Police citing lack of evidence. The Special Investigation Team (SIT) constituted by the current Union Government under Ministry of Home Affairs reopened the case for detailed investigation. Earlier, Naresh Sehrawat and Jaspal Singh have been convicted and punished with death penalty and life imprisonment respectively after the investigations of SIT. National Genral Secretary of ABVP Shri Ashish Chauhan said, "Such convictions are necessary to spread the message that political motives must not lead to such mass destructions. ABVP welcomes the verdict of Delhi High Court and is hopeful that justice is ensured in the pending cases of the anti-Sikh riots as well." ■

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री की सूची

अधिवेशन वर्ष	अधिवेशन स्थान	राष्ट्रीय अध्यक्ष	महामंत्री
1949	-	श्री ओमप्रकाश बहल	श्री केशवदेव शर्मा
1950	दिल्ली	श्री लाला राम गुप्ता	श्री नरेश जौहरी
1951	दिल्ली	श्री लाला राम गुप्ता	प्रा. वेदप्रकाश नंदा
1952	-	-	-
1953	-	-	-
1954	दिल्ली	डॉ. सुरेन्द्र मित्तल	डॉ. मुरली मनोहर जोशी
1955	-	-	-
1956	सागर	प्रा. वेदप्रकाश नंदा	श्री नकुल भार्गव
1957	जालंधर	प्रा. वेदप्रकाश नंदा	श्री नकुल भार्गव
1958	आगरा	प्रा. वेदप्रकाश नंदा	श्री माधव परलकर
1959	मुंबई	प्रा. वेदप्रकाश नंदा	श्री माधव परलकर
1960	जबलपुर	प्रा. हरिवंश लाल ओबराय	श्री माधव परलकर
1961	प्रयाग	प्रा. हरिवंश लाल ओबराय	श्री विजय मंडलेकर
1962	दिल्ली	प्रा. वी. नागराजन	श्री विजय मंडलेकर
1963	ग्वालियर	डॉ. एम. वी. कृष्णराव	श्री रामकृष्ण मिश्र
1964	नागपुर	प्रा. दत्ताजी डिडोलकर	श्री रामकृष्ण मिश्र
1965	मुंबई	प्रा. गिरिराज किशोर	श्री रामकृष्ण मिश्र
1966	कानपुर	प्रा. गिरिराज किशोर	श्री भोलानाथ विज
1967	इन्दौर	प्रा. यशवंतराव केलकर	श्री विकास भट्टाचार्य
1968	हैदराबाद	प्रा. नारायण भाई भंडारी	श्री संगमेश्वर रेड्डी
1969	कलकत्ता	श्री पद्मनाभ आचार्य	श्री रविकुमार अय्यर
1970	त्रिवेन्द्रम	प्रा. दत्ताजी डिडोलकर	श्री राजकुमार भाटिया
1971	दिल्ली	प्रा. दत्ताजी डिडोलकर	श्री राजकुमार भाटिया
1972	पटना	प्रा. दत्ताजी डिडोलकर	श्री राजकुमार भाटिया
1973	अहमदाबाद	श्री नटकर लाल राजगुरू	श्री राजकुमार भाटिया
1974	मुंबई	श्री बाल आपटे	श्री पिराट्ला वैकटेश्वरलू
1975	आपातकाल		
1976	आपातकाल		
1977	वाराणसी	श्री बाल आपटे	श्री महेश शर्मा
1978	बैंगलोर	श्री बाल आपटे	श्री महेश शर्मा
1979	जयपुर	प्रा. पी. वी. कृष्ण भट्ट	श्री महेश शर्मा
1980	रायपुर	प्रा. पी. वी. कृष्ण भट्ट	श्री महेश शर्मा
1981	हुबली	प्रा. पी. वी. कृष्ण भट्ट	श्री महेश शर्मा

1982	नागपुर	प्रा. ओमप्रकाश कोहली	श्री दत्तात्रेय होसबाले
1983	राजकोट	प्रा. ओमप्रकाश कोहली	श्री सुशील कुमार मोदी
1984	पटना	प्रा. ओमप्रकाश कोहली	श्री सुशील कुमार मोदी
1985	दिल्ली	प्रा. अशोक मोडक	श्री सुशील कुमार मोदी
1986	विशाखापट्टनम	प्रा. अशोक मोडक	श्री हरेन्द्र कुमार
1987	आगरा	प्रा. अशोक मोडक	श्री हरेन्द्र कुमार
1988	मुंबई	प्रा. अशोक मोडक	श्री हरेन्द्र कुमार
1989	पटना	प्रा. रामस्नेही गुप्त	श्री हरेन्द्र कुमार
1990	हैदराबाद	प्रा. राजकुमार भाटिया	श्री चंद्रकांत पाटिल
1991	जयपुर	प्रा. राजकुमार भाटिया	श्री चंद्रकांत पाटिल
1992	कानपुर	प्रा. राजकुमार भाटिया	श्री चंद्रकांत पाटिल
1993	भुवनेश्वर	प्रा. राजकुमार भाटिया	श्री विनोद तावडे
1994	इंदौर	प्रा. राजकुमार भाटिया	श्री वी मुरलीधरन
1995	नागपुर	डॉ. डी. मनोहर राव	श्री वी मुरलीधरन
1996	बैंगलोर	डॉ. डी. मनोहर राव	श्री महेन्द्र पांडे
1997	चेन्नई	श्री दिनेशानंद गोस्वामी	श्री महेन्द्र पांडे
1998	मुम्बई	श्री दिनेशानंद गोस्वामी	श्री अतुल कोठारी
1999	लखनऊ	श्री दिनेशानंद गोस्वामी	श्री अतुल कोठारी
2000	रायपुर	श्री दिनेशानंद गोस्वामी	श्री अतुल कोठारी
2001	गुवाहाटी	श्री कैलाश शर्मा	श्री रमेश पप्पा
2002	कोषिकोड(केरल)	श्री कैलाश शर्मा	श्री रमेश पप्पा
2003	कर्णावती(गुजरात)	श्री कैलाश शर्मा	श्री के. एन. रघुनंदन
2004	जयपुर	श्री कैलाश शर्मा	श्री के. एन. रघुनंदन
2005	भोपाल	श्री कैलाश शर्मा	श्री के.एन. रघुनंदन
2006	हैदराबाद	डॉ. रामनरेश सिंह	श्री सुरेश भट्ट
2007	कानपुर	डॉ. रामनरेश सिंह	श्री सुरेश भट्ट
2008	जलगांव	प्रा. मिलिंद मराठे	श्री विष्णु दत्त शर्मा
2009	ऊना(हि.प्र.)	प्रा. मिलिंद मराठे	श्री विष्णु दत्त शर्मा
2010	बैंगलोर	प्रा. मिलिंद मराठे	श्री उमेश दत्त
2011	दिल्ली	प्रा. मिलिंद मराठे	श्री उमेश दत्त
2012	पटना	प्रा. मुरली मनोहर	श्री उमेश दत्त
2013	काशी	प्रा. मुरली मनोहर	श्री श्रीहरिबोरिकर
2014	अमृतसर	डॉ. नागेश ठाकुर	श्री श्रीहरिबोरिकर
2015	भुवनेश्वर	डॉ. नागेश ठाकुर	श्री विनय बिदरे
2016	इंदौर	डॉ. नागेश ठाकुर	श्री विनय बिदरे
2017	रांची	डॉ. एस. सुबैय्या	श्री आशीष चौहान

छात्रसंघ चुनाव



काशी : छात्रसंघ चुनावों में जीत के बाद विजय जुलूस निकालते
अभाविप कार्यकर्ता



पटना विश्वविद्यालय में जीत के बाद प्रसन्न मुद्रा में छात्रनेता एवं
परिषद कार्यकर्ता



राँची विश्वविद्यालय में जीत के बाद प्रमाण पत्र के साथ
नव - निर्वाचित छात्र नेता व परिषद् कार्यकर्ता



ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा के सभी पदों
पर जीत के बाद नवनिर्वाचित छात्रसंघ पदाधिकारी एवं विद्यार्थी
परिषद् के कार्यकर्ता

शब्दरंग

